द्वितीय अध्याय

हिन्दी की समकालीन मुस्लिम महिला उपन्यासकार और उनका उपन्यास-साहित्य :: परिचयात्मक-संदर्भ

द्वितीय अध्याय

हिन्दी की समकालीन मुस्लिम महिला उपन्यासकार और उनका उपन्यास-साहित्य :: परिचयात्मक-संदर्भ

2. भूमिका

आधुनिक शिक्षा के प्रचार-प्रसार से आज समाज के सभी वर्गों में जागृति आई है । पहले महिलाओं को घर की चारदिवारी में कैद कर रखा जाता था । किन्तु आधुनिक परिवेश में वही महिला अपने समाज एवं देश की शक्ति बन पुरुष के कंधे से कंधा मिलाकर जीवन के हर क्षेत्र में महत्वपूर्ण योगदान दे रही है ।

दिन-प्रतिदिन हिन्दी लेखन के परिधि में फैलाव हो रहा है । चूँकि हर वर्ग एवं सम्प्रदायों की अपनी-अपनी अलग समस्यायें होती है । उनके संघर्षों का अनुभव भी अलग-अलग होता हैं । मुस्लिम समाज की महिलाओं का अपने समाज की समस्याओं से संघर्ष की अलग छटपटाहट है, इनका अपना अलग अनुभव है । अतः मुस्लिम महिला उपन्यासकारों के उपन्यास के कथापात्र जो उस समाज की अक्षरशः स्थिति को निरुपित करते हैं, दूसरे कथाकार शायद उस सहजता से निरुपित न कर सके ।

मुस्लिम महिला उपन्यासकारों के कुछ उपन्यासों का केन्द्रीय विषय निम्न मध्यमवर्गीय नारी जीवन की त्रासदी है । इन उपन्यासों में प्रेम-विवाह, तलाक, पतियों का निकम्मापन, अवैध संबंध, सास का अत्याचार, सौतेली माँ का अत्याचार, परित्यक्ता नारी का अकेलापन, जीने के लिए

अवांछित स्थितियों का स्वीकार तथा अन्य संदर्भों में नारी जीवन **की** विवशता का मार्मिक चित्रण है ।

2.1 हिन्दी की समकालीन मुस्लिम महिला उपन्यासकार

वैसे तो हिन्दी साहित्य जगत के प्रमुख समकालीन महिला उपन्यासकार हैं, जैसे - कृष्णा सोबती, शशिप्रभा शास्त्री, मन्नू भंडारी, शिवानी, उषा प्रियंवदा, मेहरुन्निसा परवेज, मालती परुलकर, दीप्ति खंडेवाल, मृदुला गर्ग, ममता कालिया, मालती जोशी, मंजुल भगत, मृणाल पांडे, राजी सेठ, कृष्णा अग्निहोत्री, नासिरा शर्मा, सुधा अरोड़ा, चित्रा मुदगल, मैत्रेयी पुष्पा इत्यादि । इन सभी उपन्यासकारों के उपन्यासों में सामाजिक विसंगतियाँ, सामाजिक कुरीतियाँ एवं आधुनिकता के मोहपाश से बंधे विकृत मानसिकताओं का चित्रण है ।

समकालीन मुस्लिम महिला उपन्यासकारों में मेहरुन्निसा परवेज एवं नासिरा शर्मा की ही उपलब्धता है । अतः प्रस्तुत शोध-प्रबंध में इन्हीं दो प्रख्यात समकालीन मुस्लिम महिला उपन्यासकारों के उपन्यासों का अध्ययन किया गया है ।

2.1.1 मेहरुन्निसा परवेज : परिचयात्मक-संदर्भ

हिन्दी की समकालीन मुस्लिम महिला उपन्यासकारों में मेहरुन्निसा परवेज का महत्वपूर्ण स्थान है । अपने उपन्यासों में उन्होंने जीवन के विभिन्न आयामों एवं उनकी समस्याओं का सहजता एवं ईमानदारी से चित्रण किया है ।

मध्य प्रदेश के बालाघाट में १० दिसम्बर १९४४ ई. को एक सुसंस्कृत मुस्लिम परिवार में मेहरुन्निसा परवेज का जन्म हुआ था । इनके

पिता अब्दुल हमीद उच्च आदर्शवादी एवं प्रगतिशील विचार धारा वाले एक उदार व्यक्ति थे । बचपन में मेहरुन्निसा को लोग 'नदिया' के नाम से भी पुकारते थे। मेहरुन्निसा के बचपन का अधिकांश समय पिता के साथ आदिवासी क्षेत्र बस्तर में गुजरा ।

मेहरुन्निसा परवेज की औपचारिक शिक्षा मात्र उच्च विद्यालय तक हुई । किन्तु उनके उच्च शैक्षणिक व्यक्तित्व का मूल केन्द्र बिन्दु उनका अपना सहज व्यक्तिगत अनुभव है । पन्द्रह वर्ष की उम्र में ही मेहरुन्निसा का विवाह पैंतीस वर्षीय रउफ परवेज के साथ मुस्लिम रीति-रिवाज के साथ हुआ । इस बेमेल विवाह के कारण उनका दाम्पत्य जीवन असफल रहा । १९७० ई. में उन्होंने एक पुत्र सलीम को जन्म दिया । किन्तु दाम्पत्य जीवन में सामंजस्य नहीं रहने के कारण पति-पत्नी के बीच तलाक हो गया । १९७९ ई. में मेहरुन्निसा परवेज का दूसरा विवाह डॉ. भगीरथ प्रसाद मिश्र से हुआ । डॉ. भगीरथ प्रसाद मिश्र भारतीय प्रशासनिक सेवा के एक अधिकारी थे । इस सुखद दाम्पत्य जीवन में एक पुत्री सिमाला एवं दो पुत्र - समर एवं समीर का जन्म हुआ । पुत्री सिमाला प्रसाद भारतीय पुलिस सेवा में अधिकारी हैं । सोलह वर्ष की आयु में पुत्र समर का निधन अगस्त १९९८ ई. को हो गया । पुत्र समर की असामयिक मृत्यु ने इन्हें भीतर से झकझोर कर रख दिया ।

हाई स्कूल के दिनों से ही इन्होंनें कहानी लिखना शुरु कर दिया था । इनकी पहली कहानी 'जंगली हिरण' तत्कालीन लोकप्रिय साप्ताहिक 'धर्मयुग' में छपी थी । १९६३ ई. में इनकी दूसरी कहानी 'पाँचवीं कब्र' चर्चित पत्रिका 'नई कहानियाँ' में छपी थी । उसके बाद लगातार उनकी कहानियाँ 'साप्ताहिक हिन्दुस्तान' और 'सारिका' जैसे पत्रिकाओं में छपती रही । प्रेमचंद,

आचार्य चतुरसेन शास्त्री, आशापूर्णा देवी, अमृतलाल नागर और मोहन राकेश की रचनाओं से वे प्रभावित हैं । साहित्य के विभिन्न विधाओं में इनकी गहरी पकड़ है ।

2.1.2 नासिरा शर्मा : परिचयात्मक-संदर्भ

नासिरा शर्मा का जन्म उत्तर प्रदेश के इलाहाबाद में २२ अगस्त १९४८ ई. को एक संभ्रांत मुस्लिम शिया परिवार में हुआ था । इनके पिता जामिन अली इलाहाबाद विश्वविद्यालय में उर्दू के प्राध्यापक थे । वे एक प्रख्यात विद्वान, कवि एवं प्रगतिशील विचारधारा वाले उदार व्यक्ति थे । नासिरा शर्मा की माँ नाजनीन बेगम एक कुशल गृहिणी थी । नासिरा शर्मा के बचपन का नाम नासिरा अली था । जब नासिरा मात्र सात वर्ष की थी, उनके पिता की मृत्यु हो गई ।

इलाहाबाद के कॉन्वेंट में इनकी प्राथमिक शिक्षा एवं हमीदिया से माध्यमिक शिक्षा हुई । इन्होंने १९६७ ई. में बी.ए. की उपाधि इलाहाबाद विश्वविद्यालय से प्राप्त की । जवाहरलाल नेहरु विश्वविद्यालय, दिल्ली से १९७६ ई. में उन्होंने अंग्रेजी, हिन्दी, पश्तो, उर्दू, एवं फारसी भाषा की पढ़ाई की । इन सारी भाषाओं में गहरी रुचि एवं पकड़ होने के कारण ईरान उनके साहित्य शोध का विशेष केन्द्र रहा है ।

उन्नीस वर्ष की आयु में नासिरा शर्मा का विवाह डॉ. रामचन्द्र शर्मा के साथ हुआ । डॉ. रामचन्द्र शर्मा इलाहाबाद विश्वविद्यालय में भूगोल विषय के अध्यापक थे । बाद में वह जवाहरलाल नेहरु विश्वविद्यालय, दिल्ली में अध्यापन करने लगे । उनके दो बच्चे अंजू और अनिल है । नासिरा का दाम्पत्य जीवन काफी सफल रहा है ।

तीसरी कक्षा में पहली बार नासिरा ने कहानी प्रतियोगिता में भाग लिया । सातवीं कक्षा में उनकी कहानी 'राजा भैया' एक बाल पत्रिका में छपी थी । कॉलेज आते-आते उनके लिखने में दृढ़ता आ गई एवं कई पुरस्कार प्राप्त किए । वह कृशन चन्दर एवं प्रेमचन्द से प्रभावित थी । साहित्य की सभी विधाओं में नासिरा शर्मा अपने मौलिक लेखन के लिए प्रसिद्ध हैं ।

2.2 हिन्दी के समकालीन मुस्लिम महिला उपन्यासकारों के उपन्यासों का प्रकाशनक्रम

उपन्यासकार	उपन्यासों का नाम	प्रकाशक	प्रकाशन वर्ष
मेहरुन्निसा परवेज	आँखों की दहलीज	अक्षर प्रकाशन, दिल्ली	१९६९ ई.
	उसका घर	नेशनल पब्लिशिंग हाउस, दिल्ली	१९७२ ई.
	कोरजा	वाणी प्रकाशन, दिल्ली	१९७७ ई.
	अकेला पलाश	वाणी प्रकाशन, दिल्ली	१९८१ ई.
	समरांगण	वाणी प्रकाशन, दिल्ली	२००२ ई.
	पासंग	वाणी प्रकाशन, दिल्ली	२००४ ई.
नासिरा शर्मा	सात नदिया : एक समन्दर	अभिव्यंजना प्रकाशन, दिल्ली	१९८४ ई.
	शाल्मली	किताबघर प्रकाशन, दिल्ली	१९८७ ई.
	ठीकरे की मंगनी	किताबघर प्रकाशन, दिल्ली	१९८९ई.
	जिन्दा मुहावरे	वाणी प्रकाशन, दिल्ली	१९९३ ई.
	अक्षयवट	भारतीय ज्ञानपीठ, दिल्ली	२००३ ई.
	कुंइयाजान	सामयिक प्रकाशन, दिल्ली	२००५ ई.

	जीरो रोड	भारतीय ज्ञानपीठ, दिल्ली	२००८ ई.
	पारिजात	किताबघर प्रकाशन, दिल्ली	२०११ ई.
	अजनबी ज़जीरा	लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद	२०१२ ई.
	कागज की नाव	किताबघर प्रकाशन, दिल्ली	२०१४ ई.

2.3 हिन्दी की समकालीन मुस्लिम महिला उपन्यासकार मेहरुन्निसा परवेज के उपन्यासों का विषयगत विवेचन :

2.3.1 आँखों की दहलीज

'आँखों की दहलीज' मेहरुन्निसा परवेज द्वारा रचित प्रथम उपन्यास है । इस उपन्यास का प्रकाशन सन् १९६९ ई. में हुआ था । नारी जीवन की सम्पूर्णता मातृत्व में है । इस उपन्यास में नारी जीवन की अपूर्णता, उसके अंतर्द्वन्द, उसकी निराशा एवं छटपटाहट को लेखिका ने मार्मिक ढ़ंग से प्रस्तुत किया है । उपन्यास में तालिया, जमीला और डॉ॰ शशि की असफल प्रेम-कथा का वर्णन है । उपन्यास के माध्यम से लेखिका ने समाज में व्याप्त विवाहेत्तर संबन्ध, असफल प्रेम, कुवांरी एवं कामकाजी महिलाओं की समस्याओं जैसे विषयों पर चर्चा की है । उपन्यास की नायिका तालिया है । तालिया के पिताजी सिद्दिकी साहब उच्च पद से अवकाश प्राप्त पदाधिकारी थे । तालिया की माँ परम्परागत रुढ़िवादी मुस्लिम परिवार से थी । अतः वह आधुनिक और दकियानूसी विचारों के बीच फँस कर रह जाती थी । तालिया का पति शमीम एक अध्यापक था । वह सुलझे विचारों वाला व्यक्ति था । शमीम के साथ तालिया का दाम्पत्य जीवन अत्यंत सुखद था । किन्तु जब तालिया को पता

चला कि शमीम कभी बाप नहीं बन सकता है तो वह भीतर से टूट गई । तालिया का परिचय जावेद नामक एक विवाहित व्यक्ति से हुआ । तालिया की माँ जानती थी कि तालिया कभी शमीम के बच्चे की माँ नहीं बनेगी । अतः वह इस रिश्ते को प्रोत्साहित करती थी - ताकि बेटी की सूनी कोख भर सके । जावेद अपने छल, बल एवं चातुर्य से तालिया को वशीभूत कर प्यार का नाटक करता रहा । अतः एक दिन जब इस संबन्ध का समाज के सामने खुलासा हुआ, जावेद साफ मुकर गया । जावेद ने अपनी सामाजिक एवं पारिवारिक प्रतिष्ठा को सुरक्षित रखने के लिए तालिया से सारे संबन्ध तोड़ लिए । तालिया ने अपराध बोघ से ग्रसित होकर आत्महत्या का प्रयास किया । उसके माँ-पिताजी और जमीला उसे देखने आए । जमीला तालिया की दोस्त थी । तालिया के अनुरोध पर जमीला उनके साथ रहने लगी ।

तालिया शमीम की दूसरी शादी करवाना चाहती थी । वह चाहती थी कि जमीला शमीम से शादी कर ले किन्तु जमीला ने साफ मना कर दिया । जमीला जमशेद से प्यार करते थी एवं उसी से शादी करना चाहती थी । कुछ पारिवारिक कारणों से इसमें बाधा आ रही थी । एक दिन तालिया ने धोखे से जमीला और शमीम का संबंध बनवा दिया और अपने पति को जमीला के हाथों सौंपकर गुमनाम राहों में खो गई ।

2.3.2 उसका घर

मेहरुन्निसा परवेज द्वारा रचित उपन्यास 'उसका घर' में ईसाई परिवार की औरतों के संघर्ष, उनके शारीरिक, मानसिक एवं आर्थिक शोषण किए जाने की एक अद्भुत एवं मार्मिक कहानी है । इसकी मुख्य पात्रा ऐलमा है । उसके पिताजी जगदलपुर के एक चर्च में पादरी थे जिनका देहान्त हो चुका था ।

ऐलमा अपने बड़े भाई, पिता की विधवा बहन एवं उसकी बेटी रेशमा के साथ रहती थी । ऐलमा का बड़ा भाई किसी ऑफिस में काम करता था । रेशमा की माँ को सभी लोग आंटी कह कर बुलाते थे । अविवाहित रेशमा एक बच्चे की माँ थी जिसे एक हिन्दू लड़के देव से प्यार था । किन्तु अपनी माँ के विरोध के कारण दोनों शादी नहीं कर पाए थे । रेशमा और ऐलमा के उम्र में करीब पाँच वर्षों का अन्तर था । ऐलमा अपने संकोची स्वभाव के कारण अत्याचारों को चुपचाप सह लेती थी । दमा की बीमारी के कारण उसके पति ने उसे तलाक दे दिया था । भाई पर बोझ नहीं बने, इसलिए वह एक स्कूल में नौकरी करने लगी थी ।

एक दिन उसकी मुलाकात उसके भैया के तलाकशुदा ऑफिसर आहूजा से हुई । धीरे-धीरे वह अपने भाई और आहूजा के फैलाए जाल में फँस गई । भैया उसे आहूजा के साथ फिल्म हॉल में अकेला छोड़कर चले गए । फिल्म की समाप्ति के बाद आहूजा उसे घर के बजाय एक सुनसान से गेस्ट हाउस में ले गया, जहाँ उसने ऐलमा के साथ संबंध स्थापित किए । यह क्रम बार-बार दोहराया जाने लगा । एक दिन ऐलमा अपने एक दोस्त सोफिया के घर गई । उसकी एक दुकान थी । गरीबी और पुरुषों के वासनायुक्त व्यवहार के कारण उसके मन में बचपन से ही पुरुषों के प्रति सम्मान नहीं था । उसका पति जॉन अपंग था । जॉन ने उसे कठिनाईयों वाले दिनों में संभाला था । शाम को घर लौटते समय रास्ते में ऐलमा को आहूजा मिल गया । आहूजा अब उसे जहाँ-तहाँ मिलने लगा था और वह लोगों की नजरों से बचने के लिए, न चाहते हुए भी, उसकी कार में सवार हो जाती थी ।

रेशमा देव के साथ चित्रकूट घूमने गई थी । उसने आहूजा के बारे में सारी बातें मालूम कर ली थी कि भैया ने अपने लिए ऐलमा को आधार

बनाया है । आहूजा अय्याश किस्म का व्यक्ति था जिसकी न जाने कितनी प्रेमिकायें थी । भैया और आहूजा के फैलाए गए जाल में ऐलमा एक मूक जानवर की तरह फँस गई थी । रेशमा ने उसे मद्रास चले जाने का सुझाव दिया । वहाँ एक प्राइवेट कॉलेज में उसे नौकरी मिल सकती थी । दमे की तकलीफ और मन की पीड़ा के कारण ऐलमा का शरीर बुखार से तप रहा था । उसे देखने भैया उसके कमरे में आए । ऐलमा को ऐसा लगा जैसे भैया ममता के कारण नहीं बल्कि उस व्यापारी की तरह आये हैं जिसका बिकाऊ जानवर बीमार पड़ गया हो । शाम को आहूजा ऐलमा को अपने साथ घुमाने ले गया । खराब तबियत और आहूजा के व्यवहार ने उसे मर्माहत कर दिया ।

मद्रास में ऐलमा का नौकरी के लिए चयन हो गया । आहूजा अब अपने कटाक्षों से ऐलमा को अपमानित करने लगा था । उसने उसके पति की नई शादी के बारे में बताया । ऐलमा भीतर से टूट गई । एक दिन आंटी और भैया के बीच झड़प हो गई, जिसमें आंटी ने गुस्से से कहा कि दुनिया में तुम जैसा भाई नहीं होगा, जो अपने बहन का सौदा करता हो । उसे तलाक इसलिए दिलाया ताकि उसकी सुन्दरता का सौदा तुम अपने ऑफिसरों से कर सको । आंटी ने जैसे सबके सामने उसे नंगा कर दिया था । अगले दिन ऐलमा ने भैया को अपनी नई नौकरी के बारे में बताया ।

ऐलमा को सोफिया से मालूम हुआ कि लोग अब उसके और आहूजा के बारे में अश्लील बातें करते हैं कि उसका भाई उसकी सुन्दरता के बदौलत झूठे वाउचर पास करवाता है । आहूजा दिल्ली जाने वाला है, यह जानकर ऐलमा को बहुत अच्छा लगा । भैया को पिता का बंगला छोड़ने को मजबूर होना पड़ा क्योंकि वह चर्च का था । बंगला छोड़ने के क्रोध में उसने

अपना पुराना चर्च छोड़ नया चर्च फिलेडेल्फिया ज्वायन कर लिया था । ऐलमा और आंटी को इससे काफी आघात लगा । भैया का अपना घर बनकर तैयार हो गया था । आंटी अब ज्यादा बीमार रहने लगी थी । इसी बीमारी के क्रम में उनकी मृत्यु हो गई । उनके अंतिम संस्कार के लिए नौकर जोसेफ ने पुराने चर्च में सूचना भेज दी थी, जिस पर भैया क्रोध से आग-बबूला हो उठे । पहली बार ऐलमा ने इस स्थिति में अपना विरोध दर्ज कराया कि कम से कम इस परिस्थिति में तो खींचतान मत करें । नया चर्च उन्होंने ज्वाइन किया था, आंटी ने नहीं ; अतः उनका पुराने चर्च के मुताबिक ही अंतिम संस्कार किया जाए । सारे कामों में भैया सबसे पीछे रहे । आंटी के मौत के बाद देव घर आया और रेशमा से शादी करने की बात की । ऐलमा के मन में विचार आया कि रेशमा, भैया और भाभी सब जा रहे हैं । वह कहाँ जाए ? अगर मद्रास में नौकरी नहीं लगती तो वह कहाँ रहती ? उसके जीवन का क्या होता ?

रेशमा के विदाई के दिन ऐलमा ने अपनी बेटी की तरह अपने सारे गहने रेशमा को पहना दिए और मद्रास के लिए रवाना हो गई । अब वह आगे आने वाले समय के बारे में सोचने लगी ।

2.3.3 कोरजा

मेहरून्निसा परवेज द्वारा रचित 'कोरजा' उपन्यास में निम्न मध्यमवर्गीय मुस्लिम परिवार के संघर्ष की कथा है । मुस्लिम परिवार के पुरूषों का अय्याशीपूर्ण आचरण एवं स्त्रियों का शोषण इसका मुख्य केन्द्र बिन्दु है । इस उपन्यास की कथावस्तु में कहीं बाप की बुरी नजर अपनी जवान बेटी पर है, तो कहीं किसी अय्याश पुरूष का एक माँ और उसकी बेटी दोनों पर, तो कहीं एक बूढ़े का एक जवान विधवा पर, तो कहीं नौकर द्वारा अबोध बालिकाओं के

यौन शोषण का वर्णन है । उपन्यास की मुख्य पात्रा नसीमा है । बस्तर क्षेत्र में धान की फसल कट जाने के बाद बिखरे हुए बालियों को छोटे-छोटे बच्चे चुनते हैं । बस्तर में इसे कोरजा कहते हैं । यह हल्बी भाषा का एक शब्द है । पात्र नसीमा भी अपने जीवन की स्मृतियों को 'कोरजा' की तरह चुनती है ।

उपन्यास का आरम्भ रब्बो की बेटी रन्नो के विवाह में नसीमा के आगमन से होता है । विवाह के समय रन्नो गर्भवती थी, जिसे देखकर नसीमा अपनी यादों में उलझ गई । नसीमा का नाना रहमान खाँ बस्तर का एक धनवान ठेकेदार था । उसकी चरित्रहीनता के कारण नानी अरमान बी का दाम्पत्य जीवन अत्यंत कष्टप्रद रहा । नसीमा की माँ फातमा जब जवान हुई तो उसकी अनुभवी माँ ने उसके बाप रहमान खाँ की बुरी नजर से बचाने के लिए फातमा का निकाह करीम मियाँ से करवा दिया । फातमा और करीम मियाँ का भी वैवाहिक जीवन कभी सुखद नहीं रहा । उनके दो बच्चे हुए - नसीमा और मुन्ना । घोर गरीबी, पति की उपेक्षा और समुचित इलाज के अभाव में पहले मुन्ना और फिर फातमा की मृत्यु हो गई । करीम मियाँ ने नसीमा को उसके नानी के घर भेज दिया और दूसरी शादी कर ली । नानी के घर में उनकी दूसरी बेटी साजो, साजो के तीन बच्चे रफीक, शफीक, मुन्नु और साजो के फूफी की पोती रब्बो रहती थी । कभी नानी की शानो-शौकत की जिन्दगी थी, पर अब सभी लोग घोर गरीबी में जीवन यापन कर रहे थे । राबिया की माँ का देहान्त हो गया था । दादी और पिता की मृत्यु के उपरांत वह और उसकी सौतेली माँ ही रह गए । सौतेली माँ के रिश्ते का भाई जमशेद ने माँ-बेटी दोनों को अपने प्रेमजाल में फँसा लिया । गर्भवती रब्बो को सौतेली माँ ने अरमान बी के यहाँ भेज दिया जहाँ उसने एक मृत बच्चे को जन्म दिया । साजो खाला पति के देहान्त के उपरांत नानी के पास ही रहने लगी । परिवार का सारा उत्तरदायित्व उसी पर आ

पड़ा । नानी का घर एवं खेत जुम्मन के पास गिरवी पड़े थे । जुम्मन जो कभी नानी का मुनीम हुआ करता था और साजो जिसकी गोद में खेलकर बड़ी हुई थी, परिवार को बचाने के लिए उसे हर रात जुम्मन की हवस का शिकार होना पड़ता था ।

नानी के पड़ोस में कम्मो अपनी विधवा चाची के साथ रहती थी । पहले वह अमित के पड़ोस में रहती थी । अमित पेशे से पत्रकार था । उसके परिवार में उसकी माँ मंदाकिनी, बड़ी बहन मोना एवं एक छोटा भाई दीपू थे । मोना जिससे प्यार करती थी, उसका देहान्त हो गया था, इसलिए उसने शादी नहीं की । कम्मो अमित से प्रेम करने लगी । बैंक में काम करने वाला एहसान जो रिश्ते में कम्मो का भाई लगता था, कम्मो के घर में आकर रहने लगा । वह रब्बो के अतीत से परिचित होकर भी उससे प्यार करने लगा । रब्बो के लिए एक विधुर का रिश्ता आया जिसके दो छोटे-छोटे बच्चे थे । जब एहसान को इसकी खबर मिली तो वह अपनी मजबूरियों का हवाला देकर पीछे हट गया । एहसान की तरफ से निराश रब्बो अपना गर्भपात करा उस विधुर से शादी कर गोंदिया चली गई । कम्मो और अमित दोनों एक दूसरे से सम्मोहित थे । किन्तु अमित से यह जानकारी मिलने पर कि अमित नपुंसक है, वह हताश हो गई । अमित की धारणा थी कि प्यार में आत्मा का महत्व होता है, परन्तु शरीर की आवश्यकता को लेकर वह आत्मग्लानि में डूब गया । अत्यधिक शराब एवं सिगरेट के सेवन के कारण उसकी मृत्यु हो गई । उसके बाद कम्मो ने आत्महत्या कर ली ।

नसीमा अपने पिता के घर चली गई । साजो और नानी का देहांत हो गया । मोना अपने घर में स्कूल खोलकर गरीब बच्चों को पढ़ाने लगी । उसने

साजो के अनाथ बच्चों रफीक, शफीक और मुन्नु को अपनाकर उनकी शिक्षा की समुचित व्यवस्था कर दी । सही मायने में मोना ने अपनी जिन्दगी की सार्थकता सिद्ध की ।

2.3.4 अकेला पलाश

भारतीय संविधान से प्राप्त समान अधिकार के बाद भी स्त्रियों की स्थिति दयनीय है । परिवार से ही शुरू होकर जीवन के हर क्षेत्र में उनका शोषण होता है । फलतः उन्हें पश्चाताप और मानसिक अशांति के सिवा कुछ नहीं मिलता । पलाश का फूल बहुत ही सुन्दर होता है, किन्तु सुगंधहीन होने के कारण उसकी कोई उपयोगिता नहीं है । कोई भी नारी उसे अपने जूड़े मे नहीं सजाती है, और न ही कोई अपने गुलदस्ते में रख घर की शोभा बढ़ाता है । वह सिर्फ अपनी डाल की शोभा बढ़ाकर, उसी पर मुरझाकर जमीन पर गिर जाता है । कमोवेश स्त्रियों की भी यही स्थिति है ।

मेहरून्निसा परवेज ने अपने उपन्यास 'अकेला पलाश' में स्त्रियों की इन्हीं समस्याओं को सूक्ष्मता से उजागर किया है । उपन्यास की मुख्य पात्रा तहमीना है । तहमीना की माँ का जीवन सदैव संघर्षपूर्ण रहा । बचपन में माँ का निधन, सौतेली माँ द्वारा पालन-पोषण, एक अय्याश एवं चरित्रहीन पुरूष से निकाह - जैसे कई गहरे घाव उसके जीवन से जुड़े थे । ऐसे असुरक्षा, भय एवं कलह के माहौल में पन्द्रह वर्ष की तहमीना अपने पिता के एक दोस्त जमशेद के हवस की शिकार बन गई । तहमीना की माँ ने तहमीना का निकाह उससे ही करवा दिया । इस बेमेल विवाह से तहमीना का दाम्पत्य जीवन कभी सुखद नहीं रहा । तहमीना सुलझे विचारों वाली पढ़ी-लिखी एक खूबसूरत महिला थी । किन्तु

पति की उदासीनता से व्यथित रहती थी । व्यस्त रहने के लिए वह सामाजिक कार्यों से जुड़ गई एवं एक महिला कल्याणकारी संस्था की चेयरमैन बन गई ।

तहमीना की संस्था महिलाओं को उपयुक्त सुझाव देकर उसे सम्मानित जीवन जीने की सीख देती थी । विमला नामक उसकी एक सहायिका थी । विमला बी॰ए॰ पास एक सुखी-संपन्न परिवार की महिला थी । किन्तु उसके एक गलत निर्णय ने उसके जीवन को नारकीय बना दिया । सन्यासियों से प्रभावित होकर वह आश्रम में रहने लगी जहाँ उसका शारीरिक शोषण किया जाता था । अंत में परेशान होकर जब वह वहाँ से भागकर अपने घर गई तो घर के लोग लोक-लाज के डर से रखने को तैयार नहीं हुए । तब वह एक सन्यासी के साथ रहने लगी, जिसे अपने वेतन में मिले सारे पैसे देती थी । विमला का संपर्क कई भ्रष्ट नेताओं से भी था, जिनके सिफारिश से वह गलत काम भी करवाती थी । अपने स्वभाव के अनुरूप तहमीना संस्था में काम करने वाले सभी लोगों को कर्मठ, ईमानदार और अनुशासनप्रिय बनाने का प्रयास करने लगी ।

तहमीना और नाहिद बचपन के दोस्त थे । डॉ॰ नाहिद का ट्रांसफर यहीं के अस्पताल में हो गया । कुछ दिनों के लिए वह तहमीना के साथ रहने लगी । वह अविवाहित थी । अस्पताल में पुरूष डॉक्टर द्वारा नर्सों का शारीरिक शोषण देख वह काफी दुःखी रहती थी । क्वार्टर मिल जाने पर नाहिद अस्पताल परिसर में रहने लगी । डॉ॰ महेश अग्रवाल नाहिद का सहकर्मी था । दोनों एक दूसरे से प्यार करते थे एवं अपने-अपने परिवारों से विद्रोह कर कोर्ट मैरिज कर एक साथ रहने लगे । विपुल उच्च शिक्षित, सभ्य, शिष्ट एवं आदर्शवादी नवयुवक था । अपनी गरीबी के कारण उसे कठोर शारीरिक श्रम भी करना पड़ता था । वह तहमीना की कर्मठता एवं कर्त्तव्य निष्ठा से प्रभावित हो उसे अपनी बड़ी

बहन जैसा समझता था । तहमीना भी उसे अपने छोटे भाई जैसा समझती थी । किन्तु जमशेद उसे पसंद नहीं करता था ।

तहमीना के ऑफिस में चोरी हो गई । तहमीना ने घटना की रिपोर्ट थाने में करवा दी । इसी केस के संबंध में वह एस॰पी॰ तुषार के यहाँ गई । तहमीना ने महसूस किया कि एस॰पी॰ तुषार उसके प्रति आकर्षित हो रहा था ।

गाँव में बाल मेले का आयोजन किया गया था जिसकी सारी जिम्मेदारी तहमीना पर थी । वहीं उसे तुषार मिल गया, जिसकी गाड़ी खराब हो गई थी । तहमीना ने उसका परिचय अपने पति जमशेद और बेटे रिंकु से करवाया, जिनसे वह बड़ी जल्दी ही घुल-मिल गया । शाम को लौटते समय अँधेरा हो गया था । अँधेरे में तुषार तहमीना को बार-बार स्पर्श कर तंग करने लगा । अब तुषार सदैव ऐसे मौके की तलाश में रहता कि वह तहमीना को स्पर्श कर सके । तहमीना को भी ऐसा लगा जैसे वह किसी चुम्बक की भाँति तुषार की ओर खींची जा रही है । एक दिन जमशेद की अनुपस्थिति में वह तहमीना के घर आ गया । उसने अपने छल भरे शब्दों के जाल में फंसाकर उसके साथ शारीरिक संबंध स्थापित कर लिया । वह तुषार के बिछाए जाल में फंस गई । तुषार के कपट भरे प्यार को सही मान कर तहमीना उसके पीछे पागल हो गई ।

पूरे शहर में इन दोनों के प्यार के चर्चे फैल गए । विपुल के पूछने पर तहमीना ने बताया कि वह सच्चे मन से तुषार से प्यार करने लगी है । विपुल ने तहमीना से एक परित्यक्ता एवं दो बच्चों की माँ तरु के बारे में बताया । उसकी दयनीय स्थिति देख विपुल उससे विवाह कर उसे सहारा देना चाहता था ।

तुषार के लिए तहमीना ने अपना सर्वस्व न्योछावर कर कर दिया । किन्तु समाज में अपनी मर्यादा और अपना सम्मान बचाने के लिए तुषार ने तहमीना से काफी दूरी बना लिया । एक छुट्टी वाले दिन तहमीना तुषार के मित्र अजय के घर गई । तहमीना को देखते ही तुषार का चेहरा काला पड़ गया । उसने उसे डांटते हुए कहा कि यदि यह बात उसके पति जमशेद तक पहुँचा दी जाए, तो उसकी क्या स्थिति होगी ? तहमीना की समझ में अब आया कि तुषार ने उसके साथ विश्वासघात किया है । अब तुषार उसके लिए एक अजनबी सा बन गया । बाद में अजय से उसे मालूम हुआ कि तुषार अपने परिवार के साथ दिल्ली चला गया । विपुल को देहरादून के एक प्राइवेट फर्म में नौकरी मिल गई और उसने तरु से शादी कर ली ।

मीनाक्षी के साथ तहमीना एक ग्रामीण मेला देखने गई । मेले की समाप्ति के बाद चारों ओर उदासीपन का साम्राज्य फैल गया था । तहमीना सुन्दरता का अंत जान चुकी थी । उसने पूर्णतः तुषार को अपने मन से निकाल दिया था ।

2.3.5 समरांगण

'समरांगण' मेहरुन्निसा परवेज द्वारा रचित उपन्यास है । उपन्यास का परिवेश सन् १८५७ ई. के आस-पास का है । किसी सजग व्यक्ति का जब चारित्रिक पतन होता है तो वह न केवल अपने परिवार और समाज के लिए घातक बन जाता है, बल्कि अपनी मातृभूमि के साथ भी विश्वासघात कर उसे गुलामी के अंधकार में और आगे धकेल देता है । जब उसे अपनी गलतियों का अहसास होता है, तब तक वह उस दल-दल में बुरी तरह धँस चुका होता

है । लेखिका ने व्यक्ति के इसी चारित्रिक दोष को आधार बनाकर इस उपन्यास की रचना की है ।

अपने विश्वसनीय व्यक्तियों के विश्वासघात के कारण मुगल बादशाह बहादुरशाह जफर को मेजर हडसन ने लाल किले में नजरबंद कर उनके बेटे मिर्जा, दो पोते खिदिर सुल्तान और अबू बकर को सार्वजनिक रुप से अपमानित कर मार डाला था । दिल्ली में मारकाट और लूटमार मच गई । ऐसी ही विकट परिस्थितियों में पंडित गोपीलाल अपनी नई ब्याहता पत्नी सुहासिनी को लेकर रात के अंधेरे में दिल्ली से बाहर अपने गाँव कश्मीर जाने के लिए जान हथेली पर रख कर निकल पड़ा । रास्ते में उसे पिंडारियों का सरदार बंगाली सिंह मिला जो अपने काफिले के साथ जबलपुर की ओर जा रहा था । सुरक्षित पहुँचाने के एवज में गोपीलाल को अपनी पत्नी के हाथों के कंगन बंगाली सिंह को देने पड़े । यात्रा के दौरान दोनों आपस में मित्र बन गए ।

नर्मदा तट पर गोपीलाल की मुलाकात एक प्रसिद्ध नौटंकी की नायिका बूंदाजान से हुई, जिसके अपूर्व सौन्दर्य की ख्याति पूरे भारत में थी । गोपीलाल बूंदाजान पर आसक्त हो गया । अब गोपीलाल जबलपुर में ही रहना चाह रहा था । बंगाली सिंह ने उसे एक परोपकारी सज्जन मिट्ठू सिंह का पता बतलाया । उनकी बड़ी हवेली थी, जिसमें वे अपनी पत्नी लता के साथ रहते थे । वे निःसंतान थे । उन्होंने गोपीलाल और सुहासिनी को अपने घर में रहने की जगह देकर सैनिक छावनी में सब्जी पहुँचाने का ठेका दिलवा दिया । गोपीलाल अपने व्यवहार, प्रखर बुद्धि एवं कर्मठता से छावनी के सभी अंग्रेज अफसरों के प्रियपात्र बन गए । सुहासिनी ने एक सुन्दर बेटे मोहन को जन्म दिया जो कुशाग्र बुद्धि का था । उसकी तार्किक शक्ति बड़ी प्रबल थी । गोपीलाल ने

बूंदाजान से मिलना-जुलना शुरू कर दिया था और उसका नृत्य समारोह भी छावनी में करवाने लगा था । बूंदाजान भी गोपीलाल के प्रेम में पागल हो अपना सारा कारोबार सीमित कर बैठी । गोपीलाल ने बंगाली सिंह की मदद से एक दो मंजिला मकान खरीद कर उसे उपहार स्वरुप दे दिया । बंगाली सिंह की चतुराई से गोपीलाल ने एक जमींदारी खरीद ली । मिट्ठू सिंह जी ने भी अपनी हवेली गोपीलाल के नाम कर दी । उन्हें यह आशा थी कि भतीजों से कानूनी विवाद समाप्त हो जाने पर हवेली वापस मिल जाएगी । बूंदाजान गोपीलाल के बच्चे की माँ बनने वाली थी । मिट्ठू सिंह जी को गोपीलाल से ऐसी उम्मीद नहीं थी । गोपीलाल को वह पुत्रवत् और सुहासिनी को पुत्रवधू मानते थे । लता और सुहासिनी दोनों को भी यह जानकर आघात-सा लगा ।

बंगाली सिंह के लोगों को पुलिस में भर्ती दिलाने के एवज में गोपीलाल ने अपना पुराना कंगन भी वापस ले लिया था । अब वह रायबहादुर कहलाने लगे थे । मिट्ठू सिंह के घर को गिराकर उसने नए घर 'सूर्य भवन' का निर्माण करवाया । गोपीलाल की चारित्रिक गिरावट को देख सुहासिनी बीमार रहने लगी । उसके दबाब के कारण मोहन का विवाह पृथा देवी नामक एक शिष्ट एवं परंपरावादी संस्कृति में पली-बढ़ी लड़की से हो गया । किन्तु पृथा मोहन को पसंद नहीं आई । पृथा ने दो जुड़वा बच्चियों चंद्रकला एवं चंद्रप्रभा को जन्म दिया । चंद्रकला का पालन-पोषण पाश्चात्य ढ़ंग से गोपीलाल और मोहन के निर्देशन में एवं चंद्रप्रभा का अपनी माँ एवं दादी के देखरेख में भारतीय संस्कृति के अनुसार होने लगा ।

बूंदाजान ने भी एक बेटी को जन्म दिया जिसका नाम जूही था । वह उसे अपने जैसी कलाकार बनाना चाहती थी । मिट्ठू सिंह जी का स्वास्थ

दिन प्रतिदिन गिरता जा रहा था । उनका देहांत होने पर गोपीलाल ने मुखाग्नि दी एवं धूमधाम से अंतिम संस्कार किया ।

फैक्टरी में हड़ताल के कारण गोपीलाल और मोहनलाल भाग दौड़ में लगे रहे । एक दिन सुहासिनी देवी का देहांत हो गया । गोपीलाल और मोहन को सूचना देने की हर कोशिश बेकार गई । पति और बेटे की अनुपस्थिति में उनका अंतिम संस्कार कर दिया गया । पृथा हमेशा बीमार रहने लगी । पृथा के भाई को अंग्रेजों ने क्रांतिकारी घोषित कर फाँसी पर चढ़ा दिया । पृथा का इलाज करने वाले डॉ. अहमद को भी काँग्रेस समर्थक होने के कारण गोली मार दी गई । तपेदिक के कारण पृथा की मृत्यु हो गई ।

मोहन का संबंध चंद्रकला की आया जूली से हो गया । वह माँ बनने वाली थी । एक दिन लता ने बंगाली सिंह को बच्चे के जन्म तक जूली की मदद करने को कहा । उसने उसे कुछ रुपये और सुहासिनी देवी के सोने के कंगन दिए । ये वही कंगन थे जिसे गोपीलाल ने बंगाली सिंह को भाड़े के रुप में दिए थे । बूंदाजान अपने बेटे और बेटी के साथ फिल्मों में काम करने बंबई चली गई ।

मोहन विदेश जानेवाला था कि एक घटना घट गई । वह अपने दोस्त अमर के साथ नर्मदा किनारे बैठा था । मोहन के धोखे में अंग्रेज सैनिकों ने अमर को गोली मार दी । गोपीलाल हतप्रभ रह गया । जिस ब्रिटिश हुकूमत को आगे बढ़ाने में उन्होंने अपने शरीर के खून की एक-एक बूँद न्योछावर कर दी, वही हुकूमत अब उसका अंत करना चाह रही है ।

गोपीलाल ने अपना अंतिम निर्णय ले लिया । उसने अपनी सारी जायदाद दोनों पोतियों के नाम कर दिया । मोहन विदेश जा चुका था । नर्मदा में

डुबकी लगाकर जब गोपीलाल बाहर निकले तो उन्हें लगा जैसे बरसों पुराना पंडित गोपीलाल बाहर निकल आया है, जिसके पास कुछ नहीं था । दिल्ली जाने के लिए गोपीलाल अंतिम बार बंगाली सिंह से मिलने आए । बंगाली सिंह ने एक छोटी से पुड़िया खोलकर गोपीलाल के सामने रख दिया । गोपीलाल विस्मित रह गये । वे सुहासिनी के कंगन थे । पौ फटने में अभी समय था । दोनों अंधेरे में आगे बढ़ गए ।

2.3.6 पासंग

मेहरुन्निसा परवेज द्वारा रचित उपन्यास 'पासंग' औरतों के संघर्ष तथा अपने ही समाज एवं परिवार के लोगों द्वारा किये गये सामाजिक, मानसिक एवं शारीरिक शोषण की दर्दनाक कथा है।

रुकैया इस उपन्यास की मुख्य पात्रा है । उसके बचपन का नाम कनी था । जब वह एक साल की थी, तभी उसके पिता सगीर का देहांत हो गया । कनी की माँ सायरा का निकाह उसके पिता ने उड़ीसा के कोटपार में करवा दिया । कनी का लालन-पालन उसकी दादी ने किया । कुलशुम कनी की दोस्त और रिश्ते की बहन थी । कुलशुम की दादी जैनब और कनी की दादी बुलाकी बेगम दोनों सगी बहनें थीं । सुगराबी बुलाकी बेगम की खास नौकरानी की पोती थी । कनी के बचपन से ही सुगराबी उसकी देखभाल कर रही थी । सायरा जब शहर में आती थी तब कनी छुपकर उससे मिलने जाती थी । जिन्दगी ने कनी को समय से पहले बड़ा और समझदार बना दिया था । वह जानती थी कि माँ चाहे उसे कितना स्नेह और प्यार दे, परन्तु उसे अपने पास नहीं रख सकती थी । वह अपनी दादी को भी दुःख नहीं दे सकती थी ।

बानो आपा कनी की दादी के भाई की पोती थी । वह कनी के घर में रहने लगी । बानो को जिस लड़के से प्यार था, वह पाकिस्तान चला गया था । वह अविवाहित किन्तु गर्भवती थी । समय बीतने पर उसने एक सुन्दर और स्वस्थ बच्चे को जन्म दिया । किन्तु घर के बड़े लोगों ने उस बच्चे को बानोआपा से सदा के लिए अलग कर दिया । समय के साथ जख्म भरने लगे । बानोआपा का निकाह कुलशुम के निकम्मे, आलसी एवं काले-कलूटे भाई दिलशाद से हो गया । परिवार के लोगों ने अपनी इज्जत के लिए बानो आपा की बलि चढ़ा दी थी ।

दादी के कहने पर कनी गणपत काका के घर धान के रुपये लेने गई । अधेड़ उम्र के गणपत ने एक भेड़िये की तरह कनी को घसीटकर कमरे की ओर ले जाना चाहा । कनी के सामने साक्षात मौत खड़ी थी । अचानक कनी ने हिम्मत जुटाकर अपना पूरा जोर लगाया और उसकी पकड़ से वह छूटकर भागते हुए घर पहुँची । इस तरह वह दरिंदगी की शिकार होते-होते बाल-बाल बच गई । कुलशुम की शादी एक प्रौढ़ व्यक्ति से होने वाली थी । उसकी पहली पत्नी बीमार रहती थी जिसके बचने की उम्मीद नहीं थी ।

दशहरे का जूलूस देखने बानोआपा, कुलशुम, कनी और सुगराबी मुमताज खाला के घर गई । यहाँ कनी का परिचय मिर्जा सादिक बेग नामक एक सुन्दर युवक से हुआ । दोनों आपस में घुल-मिल गए । दोनों एक दूसरे के मन की गहराईयों में उतर गए । सादिक के परिवार वालों की तरफ से दादी को कनी के लिए शादी का प्रस्ताव आया । काफी दिनों बाद दादी खुश थी । कनी ने शादी के मौके पर अपनी माँ के आमंत्रण के बारे में दादी से चर्चा की । दादी काफी उदास हो गई । कनी खाना-पीना छोड़ कर हठ कर बैठी थी कि उसके

ब्याह में अम्मां को बुलाना ही होगा । चारों तरफ के दबाब से दादी ने कनी की बात मान ली । कनी दादी से लिपट गई और फूट-फूट कर रोने लगी । आज वह दादी की महानता, ममता और प्रेम को स्पष्ट देख पाई थी ।

कनी को हल्दी लगाया जा रहा था । उसी समय उसकी अम्मां अपने शौहर के साथ आई । अम्मां के शौहर ने कनी को जेवरों का बक्सा दिया । बानोआपा और कुलशुम अम्मां के स्वागत में लग गए । दादी को अम्मां के आने की खबर देने कनी दादी के कमरे में गई । परन्तु दादी सबसे मुक्त हो गई थी । निकाह का घर मातम में डूब गया । दादी के अंतिम सफर की जिम्मेदारी कनी के नए पिता संभाल रहे थे । ऐसा लग रहा था, जैसे दादी का बेटा लौट आया है । उनकी बहू सायरा घर में बैठी हुई है ।

कनी व्यथित हृदय से सब देख रही थी । वह तो सबके साथ रहना चाहती थी, किसी को भी छोड़ना नहीं चाहती थी । तराजू के दोनों पल्लों को संतुलित करनेवाली वह एकमात्र पासंग थी । उसी के कारण तराजू की तुला व्यवस्थित रहती है । वह दादी और अम्मां के बीच की पासंग ही तो थी । उसके अपने भीतर के संघर्ष और अंतर्द्वन्द को कभी कोई नहीं समझ पाया । थोड़े से सुख के लिए उसे बहुत बड़ी कीमत चुकानी पड़ी थी । दादी ने उसके सुख के लिए अपनी बलि दे दी थी ।

2.4 हिन्दी की समकालीन मुस्लिम महिला उपन्यासकार नासिरा शर्मा के उपन्यासों का विषयगत विवेचन

2.4.1 सात नदिया : एक समुन्दर

नासिरा शर्मा द्वारा रचित 'सात नदिया : एक समुन्दर' उनका पहला उपन्यास है । इसका प्रकाशन १९८४ ई. में हुआ था । कथानक की पृष्ठ भूमि ईरान की क्रांति है । लेखिका ने इस उपन्यास में ईरान की इस्लामिक क्रांति के बाद महिलाओं और बुद्धिजीवियों पर किये जाने वाले अत्याचारों का वर्णन किया है । उपन्यास की सभी प्रमुख पात्र महिलायें हैं ।

तेहरान विश्वविद्यालय में फारसी साहित्य में स्नातकोत्तर करनेवाली सात लड़कियाँ थी - तय्यबा, महनाज, परी, सूसन, मलीहा, शहनाज और अख्तर सनोवर । विभिन्न विचारधाराओं के होते हुए भी सभी घनिष्ट मित्र थीं । असलम एवं मजीद उनका सहपाठी था । असलम प्रोफेसर अतापोर का बेटा था, वह न केवल अच्छी कवितायें लिखता था बल्कि विश्वविद्यालय का टॉपर भी था । सभी लड़कियाँ अपने भविष्य और शादी के सुनहरे सपने देखने में व्यस्त थी । किन्तु तय्यबा का विचार इन सबों से अलग था । सूसन और मलीहा की शादी हो गई । सभी को उनकी कमी महसूस हो रही थी । महनाज को असलम से प्यार था, किन्तु महनाज अपने पिता नासिर खान से असलम के बारे में बात नहीं कर पाई । अतः नासिर खान ने अपने मित्र मिर्जा अख्तर के इकलौते पुत्र सुलेमान अख्तर, जो काफी होनहार था, से निकाह की बात तय कर दिया । अकस्मात् नासिर खान की मृत्यु के कारण महनाज का निकाह सुलेमान के साथ हो गया । असलम का दाखिला कैम्ब्रिज विश्वविद्यालय में हो

गया । महनाज, तय्यबा, शहनाज और परी पी-एच. डी. में प्रवेश के लिए प्रयासरत थी । किन्तु विश्वविद्यालय का माहौल अशांत था ।

महनाज सुलेमान के साथ जर्मनी चली गई । शहनाज के पिता एवं भाई का देहान्त हो गया । वह तेहरान के एक गरीब मुहल्ले में रहने लगी । उसे नौकरी की सख्त जरुरत थी ।

परी के पिता ने उसकी सौतेली माँ को तलाक देकर दूसरा निकाह कर लिया । अतः वह अपनी सौतेली माँ के साथ रहने लगी । मलीहा अपने पति हुसैन के साथ विदेश से वापस लौटकर तेहरान आ गई, किन्तु ईरान की राजनीतिक हलचल काफी बढ़ जाने के कारण उसका पति हर रोज बदलता नजर आ रहा था । शहनाज को किहान समाचार पत्र में एक पत्रकार की नौकरी मिल गई । ईरान के राजनीतिक संकट को देखते हुए वह दिन-रात अपने काम में व्यस्त रहने लगी ।

शाह के प्रति लोगों में आक्रोश बढ़ रहा था । साम्यवादी और धार्मिक शाह विरोधी एक मंच पर थे । ईरान की अर्थव्यवस्था थम गई थी । शाह ने औरतों को रुढ़िवादिता से मुक्ति दिलाई थी किन्तु अधिकांश औरतों की स्थिति में कोई परिवर्तन नहीं हुआ । अतः इस बदलाव में सबसे बड़ा योगदान औरतों का था । शाह का शासन समाप्त होते ही तेहरान की पुरानी रौनक वापस आ गई । अब ईरान पर खुमैनी का शासन था । सभी खुमैनी के प्रेम में ओत-प्रोत थे, किन्तु एक विशेष वर्ग जो इन्कलाबी था, खुमैनी का बहुत बड़ा आलोचक था । नए सरकार के अंकुश से घबराकर एक वर्ग देश से भाग गया । रुढ़िवादिता के कारण औरतों पर अत्याचार बढ़ गया । तय्यबा को अपने खुले

विचार एवं आपत्तिजनक साहित्य रखने के कारण गिरफ्तार कर लिया गया । लेखकों और बुद्धिजीवियों को परेशान किया जाने लगा ।

सूसन के पति अब्बास आगा को झूठे आरोपों के साथ इस्लामिक कोर्ट के जज के पद से हटा दिया गया । देश के सभी विश्वविद्यालय बंद थे । सिर्फ जुमे की नमाज अदा करने के लिए वहाँ लाखों लोग एकत्र होते थे । खुमैनी सरकार ने विश्वविद्यालय में हजारों लड़कों को मरवा दिया । प्रगतिशील लेखकों पर अत्याचार बढ़ने लगे ।

परी अपने पति खालिद के साथ पेरिस चली गई । वहाँ बहुत से ईरानी अपनी पेट की आग बुझाने के लिए अपनी आत्मा को बेच रहे थे तो ईरानी महिलाएँ अपना शरीर । कल तक सभी शाह विरोधी थे, एक थे । अब सभी खुमैनी विरोधी थे, पर एक नहीं ।

सनोवर का पति युद्ध में शहीद हो गया । इस सदमें से वह बीमार हो गई एवं बेहोशी की हालत में उसकी मृत्यु हो गई । जवान लोग मारे जा रहे थे । शाह के शासन में भी महिलाओं पर ऐसा सख्त प्रतिबंध नहीं था जैसा कि इस इस्लामिक गणतंत्र राज्य में था । मलीहा के बच्चों को मुनाफीकीन होने का आरोप लगाकर स्कूल से बाहर निकाल दिया गया था । मलीहा के पास आमदनी का कोई जरिया नहीं रह गया था । वह हकीकत समझ रही थी कि कल क्या होगा ?

तय्यबा के साथ सुरैया नामक एक युवती कैद में थी । उस पर अवैध संबंध का इल्जाम था । ईरान में इन्कलाब होने से पहले उसका पति हमीद पढ़ाई के लिए विदेश चला गया था । सुरैया जहाँ काम करती थी, वहाँ के लोगों ने शिकायत कर दी कि हमीद के साथ इसका अवैध संबंध है । सुरैया

द्वारा दिए गए प्रमाणों को न मान कर उसे कैद कर लिया गया। हमीद को मरे दो वर्ष बीत चुके थे। जबकि वास्तविकता यह थी कि ऑफिस का नया आफिसर सुरैया से *सीगा** करना चाहता था जिसे सुरैया ने इनकार कर दिया।

सुरैया और तय्यबा पर अत्याचार का सिलसिला बढ़ता जा रहा था। तय्यबा के तलबे में बिजली के झटके दिए जाते थे। सत्ताधारी लोग उसके बाकी साथियों का पता चाहते थे। तय्यबा के तलबे में पस पर आया था। घुटनों के बल चलकर वह बाथरूम जैसे जरुरी कामों को निपटाया करती थी। उसके साथी कैदियों को गोली मार दी गई थी।

तय्यबा को एक नई जगह ले जाया गया जहाँ चौदह वर्ष की लड़की से लेकर चालीस वर्ष की अधेड़ औरतें बंद थी। सभी औरतों को क्रूर यातनाओं से गुजरना पड़ता था। उनके साथ वीभत्स बलात्कार किया जाता था। गर्भवती और जन्म देती औरतों को गोली मार दी जाती थी। तय्यबा को एक दूसरे कमरे में लाया गया जहाँ उसकी मुलाकत कुरुश से हुई। यादों की पदचाप ने दोनों को वर्षों पहले की जिन्दगी में घसीट लिया।

तय्यबा पर जुल्म जारी था। एक पासदार ने कमरे में घुसकर तय्यबा से बलात्कार किया। कैदियों पर अत्याचार बढ़ रहा था। कई कैदियों ने तंग आकर आत्महत्या कर ली थी। तय्यबा के साथी कैदी समीना और नादिरा बिना जबान खोले मर गई। तय्यबा ने बिजली के झटके, केबिल की मार, तिरस्कार और अपमान के आगे न झुकते हुए कुछ भी नहीं बताया। क्रोधित

** ऐसा विवाह जो विशेष समय के लिए होता है। यह अवधि दो घंटे से लेकर दो वर्ष तक का हो सकता है। यह कानून अवैध संबंधों को वैध बनाने हेतु शियों द्वारा आरंभ किया गया था, ताकि अवैध संबंधों पर धार्मिक बंधन रहे। यह केवल विधवा औरतों पर लागु होती है।*

नाजिम ने उसके शरीर को गोलियों से छलनी करवा दिया । तय्यबा के मुख से निकले आखिरी शब्द थे - अलविदा ! मेरे प्यारे वतन, अलविदा.... ।

2.4.2 शाल्मली

नासिरा शर्मा द्वारा रचित उपन्यास 'शाल्मली' का प्रकाशन वर्ष १९८७ ई॰ है । 'शाल्मली' एक संस्कृत शब्द है जिसका अर्थ है- सेमल का वृक्ष । सेमल के वृक्ष का मानव जीवन में महत्वपूर्ण स्थान है । इसकी लकड़ी, फूल, रूई आदि का उपयोग कई तरह से किया जाता है । लकड़ी काफी हल्की होती है, किन्तु पानी में भींग जाने पर काफी मजबूत हो जाती है । उसी प्रकार स्त्री भी बेटी, बहन, पत्नी, बहू, माँ जैसे विभिन्न रुपों में आकर पुरूषों के जीवन को सार्थक बनाती है । जिस तरह वह कोमल एवं भावनामयी है, उसी तरह अपनी दृढ़ इच्छा शक्ति एवं मेहनत के बल पर समाज में विशिष्ट सम्मान पाती है ।

उपन्यास की कथा इसकी पात्रा शाल्मली पर केन्दित है । शाल्मली एक बेटी, बहू, पत्नी, पदाधिकारी के रुप में ईमानदारी पूर्वक अपने उत्तरदायित्वों का निर्वहन करती है किन्तु उसका पति नरेश पुरुष मानसिकता से वशीभूत है । उसके लिए औरत एक बेजान वस्तु जैसी है । उसकी कुंठा परिवार के लिए घातक साबित होती है ।

शाल्मली अपने माता-पिता की इकलौती संतान थी । उसके पिता आधुनिक एवं प्रगतिशील विचारधारा के थे । शाल्मली विवाह के पश्चात् एक प्रशासनिक पदाधिकारी बन गई । उसका पति नरेश दिल्ली में किसी ऑफिस में नौकरी करता था । शुरू-शुरू में नरेश उसे नौकरी करने के लिए प्रोत्साहित करता रहा परन्तु बाद में वह कुंठित होता चला गया । उसके व्यवहार में परिवर्तन आने लगा । वह शाल्मली के मायके आने-जाने पर चिढ़ने लगा । माता-

पिता की बीमारी की अवस्था में भी शाल्मली का मायके जाना नरेश को खलने लगा ।

नरेश के विचार में पढ़ी-लिखी लड़की धन पैदा करने की मशीन है । वह शाल्मली के पासबुक में जमा पैसों को भी खर्च करने की योजना बनाने लगा । शाल्मली को सरकारी आवास मिल गया । ससुर की मृत्यु के बाद शाल्मली ने अपनी सास को अपने पास बुला लिया । उनका ध्यान वह अपनी माँ की तरह रखने लगी । नरेश के खर्चे बढ़ते जा रहे थे । वह शराब पीने लगा था एवं उसका दिन- प्रतिदिन चारित्रिक पतन होने लगा था । वह न सिर्फ शाल्मली के कमाये हुए रूपयों का बल्कि सरकारी आवास का भी दुरूपयोग करने लगा । शाल्मली के माता-पिता की बीमारी में भी वह उसके साथ उन्हें देखने तक नहीं जाता ।

आवश्यक कार्यवश शाल्मली को विदेश जाना पड़ा । उसने नरेश को भी अपने साथ चलने को कहा । किन्तु नरेश ने मना कर दिया । वापस आने पर शाल्मली को ज्ञात हुआ कि घर पर औरतें नरेश से मिलने आती थी । शाल्मली के आक्रोशित होने पर नरेश ने उससे बहस करते हुए कहा कि वह मर्द है और जो चाहे कर सकता है ।

शाल्मली भीतर से टूट गई और नरेश से यथा संभव जरूरी बातें ही करने लगी । वह चाहती तो नरेश से तलाक ले सकती थी, परन्तु उसने साथ रहते हुए जिन्दगी अपनी-अपनी तरह से व्यतीत करने का निर्णय कर लिया ।

2.4.3 ठीकरे की मंगनी

नासिरा शर्मा द्वारा रचित उपन्यास 'ठीकरे की मंगनी' का प्रकाशन वर्ष १९८९ ई. है । इस उपन्यास की नायिका महरूख एक ऐसी लड़की है जिसका

जन्म कई पीढ़ियों के बाद काफी मन्नतों के बाद हुआ था । उसके जीवन पर कोई खतरा न हो इसलिए उसके पैदा होते ही उसकी खाला ने गंदगी से भरे ठीकरे पर चमचमाता चाँदी का रूपया फेंक उसे अपने बेटे रफत के लिए मांग लिया था, यह एक टोटका था । महरूख एक ऐसी लड़की है जिसने जिन्दगी में अपना मुकाम खुद हासिल करते हुए समाज में एक मिसाल कायम किया है ।

महरुख ने जब बी॰ ए॰ पास कर लिया तो परिवार वालों ने रफत से शादी की बात की । रफत शादी के लिए तैयार नहीं था । उसने महरुख को दिल्ली से एम॰ ए॰ करने का सुझाव दिया । पहले तो घर के लोग इसके लिए तैयार नहीं थे, परन्तु बाद में सभी सहमत हो गए ।

महरुख विश्वविद्यालय के माहौल में ढ़लने लगी थी । वह सभी छात्रों के बीच बेबाकी से अपना विचार रखती एवं उस पर तर्कपूर्ण बहस करती थी ।

रफत ने घर में बताया कि वह पी-एच॰ डी॰ करने अमेरिका जा रहा है । वहाँ जाकर वह एक लड़की वैलरी के साथ 'लिविंग टुगेदर' में रहने लगा । पहले तो महरुख को इस बात पर यकीन ही नहीं हुआ परन्तु दोनों के खुशहाल जीवन की तस्वीरें देखकर उसका मन टूट गया । वह अपनी पी-एच॰ डी॰ अधूरी छोड़ एक गाँव में सरकारी शिक्षक बन गई । गाँव के लोग महरुख के व्यवहार एवं चरित्र से प्रभावित होने लगे । बच्चों के लिए पाठ्य पुस्तकों का अभाव देख उसने उनके लिए स्वयं एक सचित्र पुस्तिका तैयार की । शाम के समय वह बच्चों को पढ़ाने लगी ताकि बच्चों का भविष्य उज्ज्वल हो सके ।

नौकरानी लछमनियाँ के प्रसव के समय उसने गाँव के जमींदार से कहकर डा॰ विमला को बुलवाया जिससे न सिर्फ लछमनियाँ और उसके बच्चे

की जान बची बल्कि महीने में एक बार महिलाओं एवं बच्चों की निःशुल्क जाँच भी संभव हुई । सारे गाँव में महरुख का सम्मान और बढ़ गया ।

महरुख छुट्टी में जब अपने घर गई तो उसे पता चला कि रफत वैलरी को छोड़ कर अमेरिका से लौट आया है । वह महरुख से शादी करना चाहता था । महरुख ने शादी के लिए साफ इनकार कर दिया । साल भर बाद रफत उस पर शादी के लिए तरह-तरह से दबाव बनाने लगा । परन्तु महरूख अपने निर्णय पर अडिग रही । हार कर रफत ने कहीं और शादी कर ली ।

महरुख प्रिंसिपल बन गई । उसने अपने अथक परिश्रम के बल पर स्कूल का काया-कल्प कर दिया । अपनी थीसिस को उसने किताब की शक्ल में छपवाया । उसके लेख प्रतिष्ठित पत्रिकाओं में छपने लगे । उसे अच्छी नौकरियों के ऑफर आने लगे । किन्तु उसे गाँव में ही रहकर अपनी जिम्मेदारियाँ निभाना ज्यादा अच्छा लगा । स्कूल के काम से जब वह दिल्ली गई तब रफत के घर भी गई । रफत की महात्वाकांक्षाओं को देखकर उसे कोई हैरानी नहीं हुई ।

महरुख रिटायरमेंट के बाद अपने घर लौट गई । उसने अपने बुजुर्गों की खूब सेवा और देखभाल की । उनकी मृत्यु के बाद सभी भाई घर बेचने को तैयार हो गए । महरुख किसी भी भाई-बहन के साथ जाने को राजी नहीं हुई । वह गाँव वापस आ गई । लछमनियाँ ने उसका हार्दिक स्वागत किया । महरुख को मानो आत्मिक शांति मिल गई । यह घर उसकी अपनी मेहनत और पहचान से बना था ।

2.4.4 जिन्दा मुहावरे

नासिरा शर्मा कृत उपन्यास 'जिन्दा मुहावरे' भारत पाकिस्तान विभाजन पर आधारित है । १५ अगस्त १९४७ ई. को भारत स्वतंत्र हुआ किन्तु

उसका विभाजन हो गया । विभाजन धार्मिक था । अतः बड़ी संख्या में लोगों का विस्थापन हुआ । विस्थापन ने हिंसा एवं अमानवीयता की सारी सीमाएँ तोड़ दी । विभाजन से उपजी समस्याओं को लेकर ही इस उपन्यास की रचना की हुई है । इस उपन्यास का कथानक भारत से पाकिस्तान गए लोगों का जीवन प्रवास है । आज भी ऐसे लोगों को 'मोहाजिर' कहा जाता है - जिसका अर्थ है शरणार्थी । उपन्यास का मुख्य पात्र निजाम है । वह फैजाबाद में अपने परिवार के साथ रहता है । उसने पाकिस्तान जाने का निर्णय कर लिया ।

नासिरा शर्मा ने अपने इस उपन्यास में मुस्लिम समाज की मानसिकता को बड़े ही रोचक ढंग से प्रस्तुत किया है । अधिकांश मुस्लिम पाकिस्तान को जन्नत मानते हैं । अतः निजाम का भतीजा गोलू उर्फ गयासुद्दीन जो एक अबोध बालक है, कौतुहलवश यह शंका प्रकट करता है कि क्या चाचा मर गए कि वह जन्नत जा रहे हैं ? भारत विभाजन पर एक कटु व्यंग्य है ।

निजाम पाकिस्तान जाने वालों के काफिले में सम्मिलित हो गया । रास्ते में काफिले पर हमला कर कुछ हथियारबंद लोगों द्वारा यात्रियों को लूटा, मारा और कत्ल किया गया । कुछ जवान औरतें और लड़कियाँ गायब हो गई । अनजान जगह कराँची पहुँच कर निजाम कई दिनों तक भूखा रहने के उपरांत पेट की आग बुझाने के लिए मजदूरी करने और फेरी लगाने को विवश था । जिस मुल्क को वह अपना समझकर आया था, वहाँ उसे दो गज जमीन के लाले पर गए ।

निजाम के पाकिस्तान चले जाने के बाद उसके घर वाले हर पल उसके आने का इंतजार कर रहे थे कि जिस दिन निजाम लौटेगा उसी दिन

उसके मंगेतर सुगरा से उसका निकाह करवा देगें । पर निजाम के लौटने की कोई उम्मीद न पाकर सुगरा के माँ-पिता ने उसका निकाह खुशरु से करवा दिया । सुगरा के निकाह से निजाम की अम्मां फातमा बी सदमें में आ गई और थोड़े दिनों में उसकी मौत हो गई ।

बंटवारे के पाँच साल हो गए थे । निजाम अब जमाने की ठोकरें खाकर और हालात की धूप में तपकर एक अनुभवी व्यक्ति बन गया था । अब वह 'निजाम गारमेंट' के नाम से जाना जाता था । निजाम अब अपने परिवार वालों से मिलना चाहता था परन्तु उसे वीसा नहीं मिला । निजाम की माली हालत अच्छी हो गई थी और उसके लिए बहुत से शादी के पैगाम आने लगे । अतः फैजाबाद से आए खाँ साहब की बेटी सबीहा से उसकी शादी हो गई और वह दो बेटियों तथा दो बेटों का बाप बन गया । उसका व्यवसाय दिन-प्रतिदिन आगे बढ़ रहा था । बच्चे धीरे-धीरे जवान हो रहे थे । सबीहा के पिता मरने से पहले भारत जाना चाहते थे, अतः निजाम ने सपरिवार हिन्दुस्तान जाने के लिए वीसा के लिए आवेदन दिया ।

हिन्दुस्तान में रहीमउद्दीन खानदान की अब तीसरी नस्ल जवान हो चुकी थी । गोलू अब जवान हो गया था । वह पढ़ने में काफी अच्छा था एवं क्लास में हमेशा अव्वल आता था । निजाम जिस दिन दिल्ली आनेवाला था उसी दिन आधी रात को रहीमउद्दीन के घर पुलिस आ गई । पुलिस ने पूरे घर की तलाशी ली । पाकिस्तान से संबंध रखने वालों को दुश्मन समझा जाता था । रहीमउद्दीन पुलिस द्वारा किए गए इस हरकत को बर्दाश्त नहीं कर पाया और जैसे ही पुलिस घर से बाहर निकली, उसने इस दुनियाँ को छोड़ दिया । दोनों देशों के बीच जंग छिड़ने के कारण निजाम हिन्दुस्तान नहीं आ सका ।

पाकिस्तान में राजनीतिक परिवर्तन करवटें ले रहा था । महाजिरों की बढ़ती खुशहाली सिंध के लोगों में बेचैनी पैदा कर रही थी । निजाम की प्रसिद्धि चारों ओर फैल गई । हर तरफ उसके नाम का साईन बोर्ड, होर्डिंग बाजारों एवं दुकानों पर नजर आने लगे । महत्वपूर्ण समारोहों में उसकी उपस्थिति आवश्यक समझी जाती । अब उसकी हैसियत नेता और प्रजा दोनों को खरीद लेने की थी । खुशी के इसी दौड़ में उसके बड़े बेटे तारिक का अपहरण हो गया । समय गुजरता गया किन्तु तारिक का पता नहीं चला ।

पाकिस्तान की राजनीति में कुछ ऐसा तूफान आया कि भुट्टो को फांसी दे दी गई । निजाम को महसूस हुआ - जैसे मौत एक ऐसा सच है, जिसके आगे दुनियाँ की हर चीज छोटी और बेकार है । उसे अपने गाँव का घर और बचपन याद आने लगा ।

हिन्दुस्तान में निजाम का भतीजा गोलू कलक्टर बन गया । गाँव-घर में खुशी का माहौल लौट आया । गोलू की शादी उसकी फूफी की बेटी मासूमा से हो गई ।

पाकिस्तान के सिंध में महाजिरों को सियासी 'ब्लैक मेलर' का खिताब दे दिया गया । सिंधियों के लिए सरकार ने आरक्षण लागू कर दिया । लोग आपस में एक दूसरे के खून के प्यासे हो गए । आगजनी, लूटपाट, बम के धमाके, हत्या और बलात्कार अब एक सामान्य बात हो गई थी । ऐसे समय में निजाम ने महसूस किया कि उसे एक बार हिन्दुस्तान जाकर आना चाहिए । इस बार उसे वीसा मिलने में कोई परेशानी नहीं हुई ।

गोलू अपने चाचा निजाम का स्वागत करने दिल्ली के हवाई अड्डे पर गया । भारत पहुँच कर निजाम भावुक हो उठा ।

निजाम के इस सोच को झटका लगा कि पाकिस्तान में जो हालत हिन्दुओं की है, वही हालत हिन्दुस्तान में मुसलमानों की होगी । उसके कलक्टर भतीजे गोलू के आगे पीछे अरदली, चपरासी, कर्मचारी और दूसरे पदाधिकारी घूम रहे थे । निजाम ने महसूस किया कि करोड़ों का मालिक होकर भी यह शान उसको करांची में नसीब नहीं है । हिंदू - मुसलमान फसाद के समाचार पाकिस्तान तो पहुँचती है, किन्तु यह समाचार नहीं पहुँचता कि एक मुसलमान अफसर के नीचे हजारों हिंदू भी काम कर सकते हैं । दंगे-फसाद में मारे जाने के बाद भी इस देश में मुसलमान खुशहाल है ।

निजाम की हिन्दुस्तान में कुछ और दिन रहने की इच्छा थी, परन्तु वीजा की अवधि समाप्त हो रही थी । परिस्थिति वश उसे जाने का निर्णय लेना पड़ा । इंदिरा गाँधी हवाई अड्डे पर इमाम एवं निजाम दोनों भाई गमगीन हो गए । बड़ी मुश्किल से सभी अपने आप को जुदा कर पाए । अख्तर अपने पिता निजाम को संभालकर आगे बढ़ चला ।

2.4.5 अक्षयवट

नासिरा शर्मा द्वारा रचित उपन्यास 'अक्षयवट' का केन्द्र बिन्दु इलाहाबादी संस्कृति है । लेखिका ने बड़े ही संवेगात्मक स्तर पर यहाँ के धार्मिक, सामाजिक, सांस्कृतिक, राजनीतिक एवं ऐतिहासिक विरासत को व्यक्त किया है । 'अक्षयवट' का शाब्दिक अर्थ होता है - ऐसा बरगद का पेड़ जिसका कभी क्षय नहीं हो, अर्थात सदैव जीवंत हो । इलाहाबाद विश्वविद्यालय का लॉगो बरगद का पेड़ है । इस पेड़ की जितनी जटाएँ हैं, उतने ही स्वतंत्र पेड़ है । अर्थात विश्वविद्यालय के जितने छात्र, उतने उसके भिन्न रूप । नासिरा शर्मा ने 'अक्षयवट' के इन अर्थों को कुछ अलग रुप में भी देखने का प्रयास किया है ।

इलाहाबाद शहर सही मायने में अपनी फैलाव और गहराई में बरगद पेड़ जैसा है । जिस तरह बरगद की लटों को सुलझाना आसान नहीं है, उसी तरह इस शहर में व्याप्त समस्याओं, भ्रष्टाचार, भ्रष्ट पुलिस एवं प्रशासन से त्रस्त सामान्य लोगों को निजात दिलाना आसान काम नहीं है । जैसे बरगद की छाया के नीचे कोई पौधा नहीं पनप सकता है, वैसे ही इस शहर में लोग अपनी छोटी आशा के साथ मुश्किल से जीते हैं । दूसरी ओर बरगद का पेड़ जिस तरह अनगिनत पक्षियों का आश्रय स्थल है, ठीक उसी तरह यह शहर भी विविधताओं से भरे विभिन्न समुदायों एवं वर्गों का आश्रय स्थल है । उपन्यास का प्रमुख पात्र जहीर है । वह विचारवान, उदार एवं मानवतावादी है । समाज के पीड़ित, प्रताड़ित, असहाय एवं विवश लोगों को वह अपने मित्रों के सहयोग से ठीक उसी तरह मदद करता है, जैसे 'अक्षयवट' अपने आश्रय स्थल में सभी को शीतलता प्रदान करता है । अपनी संस्था 'मुस्कान' द्वारा वह उन बच्चों के जीवन में मुस्कान लाने का प्रयास करता है, जिनका बचपन एवं भविष्य अंधकारमय है ।

जहीर, मुरली, जुगनू, रमेश, बसंत और सलमान आपस में घनिष्ट मित्र है । एक घटना के सिलसिले में रमेश ने भूलवश गणित अध्यापक के ऊपर हाथ उठा दिया, फलतः प्रिंसिपल ने उसे रेस्टिकेट कर दिया । अतः रमेश इंटर का इम्तिहान नहीं दे पाया और इस घटना से वह बागी हो गया ।

ऐसे ही बुरे दिनों में उसकी मुलाकात जहीर से हुई जिसने उसके अन्दर की उदासी कम कर उसकी निराशा को आशा में बदला । जहीर और उसके सभी दोस्तों ने मिलकर उसे मनोनुकूल काम करने का सुझाव दिया ।

शाहगंज थाने के इंस्पेक्टर त्रिपाठी का काफी दबदबा था । वह जाति का मल्लाह था पर किसी ने उसके नाम के आगे त्रिपाठी जोड़ दिया था ।

पैसों के लिए निर्दोष लोगों को परेशान करना वह अपना पेशा समझता था । इस काम में वकील जमील अंसारी उसका सहायक था ।

इंस्पेक्टर त्रिपाठी, जहीर एवं उसके सारे दोस्तों का दुश्मन बन गया था क्योंकि जहीर ने उसके काले कारनामों की शिकायत सीटी एस॰पी॰ आनन्द कुमार से कर दी थी ।

जहीर एवं उसके सभी दोस्तों को फँसाने के लिए आए दिन त्रिपाठी व्यूह रचता पर वे किसी तरह बच जाते ।

जमील कट्टा उर्फ जमील अंसारी पेशे से वकील था । उसकी मित्रता कुछ पुलिस, स्मगलरों एवं व्यापारियों से थी । कुछ छुट-भइये किस्म के लोफरों से वह गवाहों को डरा-धमका कर झूठे मुकदमें जीत लेता था । जमील के एक खास आदमी ने रमेश की मौसेरी बहन से बलात्कार किया था, जिसका मुकदमा चल रहा था । जमील अपने लफंगों से रमेश की मौसी को मुकदमा वापस लेने के लिए धमकी दिलवा रहा था ।

जहीर का घर अकबरपुर मुहल्ला में था जहाँ हिंदू और मुस्लिम दोनों समुदाय के लोग थे । जहीर के परदादा मजीद अहमद को देश प्रेम के कारण अंग्रेजों ने फांसी दे दी थी । दादा भी एक दिन लापता हो गए । जहीर के पिता नसीम उस समय सात साल के थे । जब जहीर छः महीने का था तब इलाहाबाद में दंगे भड़कने के कारण नसीम की गलती से हत्या हो गई । परिवार को आर्थिक तंगी से बचाने के लिए दादी फिरोजजहाँ ने एक स्कूल में नौकरी कर ली । अम्मा सिपतुन सिलाई कढ़ाई के काम से कुछ पैसे उपार्जन कर लेती थी । जहीर बचपन से ही मेधावी था । उसने मैट्रिकुलेशन एवं इंटर दोनों परीक्षा में प्रथम श्रेणी प्राप्त किया । उसने इलाहाबाद विश्वविद्यालय में बी. ए. में

दाखिला लिया । विश्वविद्यालय की गंदी राजनीति के कारण जहीर का दो वर्षों के लिए निष्कासन हो गया । इससे जहीर एवं उसका परिवार पूरी तरह से टूट गया । जहीर ने अपने दोस्त मुरली की सहायता से म्युनिसिपल मार्केट में दुकान खरीदी । दादी अपने पोते के इस दुःख से काफी व्यथित थी । इसी गम में वह चल बसी ।

शहर तेजी से बदल रहा था । लोगों के विचार, आस्थायें एवं मान्यतायें बदल रही थी । अपराधियों को भ्रष्ट राजनेताओं का वरद हस्त प्राप्त था । हत्या, बलात्कार, घरों मे चोरी-डकैती जैसी घटनायें आम बात हो गई थी । ऐसे बिगड़े हालात में जहीर और उसके दोस्त लोगों की सहायता के लिए तत्पर रहते थे ।

शहर में नए एस. एस. पी. सतीश मोजमदार की नियुक्ति हुई । वह जहीर का सहपाठी था । उसकी गलतियों के कारण ही जहीर को रेस्टिकेट किया गया था । सतीश के मन में ग्लानि थी । जहीर से मिलने के लिए वह उसके घर गया । एस. एस. पी. सतीश मोजमदार को इंस्पेक्टर त्रिपाठी के काले कारनामों की जानकारी थी । उसने रमेश को स्पेशल पुलिस ऑफिसर बना दिया । इंस्पेक्टर त्रिपाठी कोतवाली थाने का एस.एच.ओ. बन गया । थाने का चार्ज लेते ही त्रिपाठी ने जहीर, रमेश और बसंत पर जानलेवा हमला करवाया । तीनों मित्र बाल-बाल बच गए । किन्तु मुरली की हत्या ट्रक से कुचलवा कर करवा दी । उसका मामा इस सदमें को बर्दाश्त नहीं कर पाया और उसकी मृत्यु हो गई ।

मुरली की मौत ने जहीर का बचपना छीन लिया । उसने अपने घर की पुताई का काम शुरु करवा दिया । इसी क्रम में उसने अपने बुजुर्गों के हाथों

की लिखी कुछ गजलें एवं पांडुलिपियाँ देखी । उसे यह अहसास हुआ कि उसे अपने पूर्वजों के राह पर ही चलना चाहिए । अम्मी सिपतुन ने उसे अपनी हवेली में ही स्कूल खोलने का सुझाव दिया ।

उत्तर प्रदेश में राष्ट्रपति शासन लागू हो गया । शहर शांत था और त्रिपाठी को जमानत मिल गई थी । त्रिपाठी ने हंगामा के घर जाकर उसकी मंझली बेटी का बलात्कार कर पूरे परिवार की गोली मारकर हत्या कर दी । शहर में फिर भय व्याप्त हो गया । पुलिस तफसीस करने लगी । राष्ट्रपति शासन समाप्त हो गया । ईमानदार ऑफिसरों का तबादला हो गया । जगन्नाथ ने पुनः अपनी पढ़ाई प्रारंभ कर दी । जहीर ने बी. ए. के द्वितीय वर्ष में अपना दाखिला करवा लिया । जहीर के एक पदाधिकारी दोस्त सुरेन्द्र ने सलमान को रेलवे का ठेका दिलवा दिया । सलमान बसंत को लेकर कानपुर चला गया । वहाँ दोनों ने मिलकर रेस्तरां खोल लिया ।

जहीर एम. ए. पास कर गया । वह पी-एच. डी. में इनरोल हो गया और अपने लिए नौकरी तलाशने लगा । इंसपेक्टर त्रिपाठी अपने प्रति लोगों का व्यवहार देख काफी निराश था । निराशा की चरम स्थिति में उसने आत्म हत्या कर ली । जहीर को ईविंग क्रिश्चियन कॉलेज में नौकरी मिल गई । उसने अविवाहित रहकर समाज के असहाय लोगों की सेवा करने का निर्णय कर लिया । उसने अपने घर में एक संस्था 'मुस्कान' बनाई और कामगार बच्चों को रात में दो घंटे पढ़ाने लगा । अम्मी सिपतुन खुश थी । वह अपनी सास फिरोजजहाँ को याद करती थी कि उनका लगाया पौधा जहीर अब एक ताकतवर दरख्त बन चुका है जो जाड़ा, गर्मी, बरसात की मार सहकर भी जिन्दा है, जैसे वह चाहती थी ।

जहीर ने अपनी संस्था 'मुस्कान' में लावारिस बच्चों की देखभाल करने के लिए शिशु-गृह खोला । सभी लोगों ने इस नेक काम के लिए भरपूर सहयोग दिया । 'मुस्कान' की खबर थोड़े ही दिनों में हर जगह फैल गई । जब भी कोई लावारिस बच्चा आता, जहीर को ऐसा लगता, जैसे जीवन से भरपूर दिन की शुरुआत हो गई है ...।

2.4.6 कुंइयाजान

कुइयां अर्थात् वह जल स्रोत जो मनुष्य की प्यास आदिकाल से बुझाता आया है । परन्तु आधुनिक समाज जल के उस मूल स्रोत को भूलकर अपनी मशीनी ताकत के बल पर जल स्रोत से खिलवाड़ कर रहा है जिसके फलस्वरूप अपार जल संपदा के रहते हुए भी लोग प्यास से तड़पने को विवश हैं ।

पानी की इसी ज्वलंत समस्या को लेकर नासिरा शर्मा ने अपने उपन्यास 'कुइयांजान' की रचना की है । इलाहाबाद इसका केन्द्र और डॉ॰ कमाल इस उपन्यास के प्रमुख पात्र हैं । उपन्यास का आरंभ इलाहाबाद की बताशेवाली गली के चंदन हलवाई की दुकान से होती है, जहाँ से विभिन्न प्रकार की खबरों का प्रसारण होता है । इलाहाबाद जैसे शहर में जहाँ दो-दो नदियों का संगम है, वहाँ हर जगह पानी के अभाव की चर्चा छायी रहती है । शहर में बिजली और पानी का घोर अभाव है । पानी के लिए वाद-विवाद एवं मारपीट होना सामान्य घटना है । पानी के लिए मनुष्य ही नहीं जीव-जन्तु भी परेशान थे । इन समस्याओं का एक मात्र कारण है - पानी का अनुचित प्रबंधन एवं परंपरागत जलस्रोतों की उपेक्षा ।

उपन्यास में शकरआरा एवं खुरशीदआरा दो बहनों के परिवार की रोचक चर्चा है । दोनों बहनों का स्वभाव एवं व्यवहार एक दूसरे के विपरीत था । शकरआरा बड़ी थी । वह बेहद सुंदर, मगरुर एवं रिटायर आई॰ ए॰ एस॰ की महात्वाकांक्षिणी पत्नी थी, जिसका वैचारिक मतभेद अपनी सास, पति जमाल खाँ, पुत्र डॉ॰ कमाल एवं बहू समीना के साथ था । खुरशीदआरा उदार, समझौतावादी एवं लोगों के प्रति सहानुभूति रखनेवाली महिला थी । उनके फौजी ऑफिसर पति की भारत-पाक युद्ध में शहादत हो गई थी । उनके दो बेटे थे जिनकी बचपन में ही मृत्यु हो गई । उनकी एकमात्र पुत्री समीना का विवाह डॉ॰ कमाल से हुआ था । दोनों बहनों में सामंजस्य का अभाव था ।

डॉ॰ कमाल उदार एवं प्रगतिशील युवक थे । असहाय एवं बीमार व्यक्तियों की मदद चिकित्सा के माध्यम से कर वह जनसेवा करना चाहते थे । अपनी सारी कमाई वह गरीब मरीजों के दवाई पर खर्च कर देते थे । उनकी पत्नी समीना ने भी हर कदम पर उनका साथ देने के लिए एक स्कूल ज्वायन कर लिया था । डॉ॰ कमाल जरुरत मंदों के मुफ्त ईलाज के लिए अपना अस्पताल खोलना चाहते थे । इस महात्वाकांक्षी योजना के लिए पैसों की आवश्यकता थी ।

डॉ॰ कमाल पानी और पानी से होनेवाली समस्याओं को लेकर विभिन्न सेमिनारों में लेख पढ़कर लोगों को जागरुक करने लगे । वे राजस्थान और बुंदेलखंड की यात्रा से लौटकर अपनी बहन सोफिया की शादी में सम्मिलित हुए । बेहतरीन इंतजाम होने के बाद भी पानी की कमी से शादी के रस्मों का मजा बिगड़ गया ।

जमाल खाँ के पास इतने पैसे नहीं थे कि वह अपने बेटे डॉ॰ कमाल के लिए अस्पताल खोल सके । अतः शकरआरा ने अपनी बहन खुरशीदआरा से मिलकर पुस्तैनी कोठी बेच कर अस्पताल के लिए सारे पैसे डॉ॰ कमाल के अकाउंट में जमा करवा दिया । कुछ ही दिनों बाद मैसिव हार्ट अटैक के कारण शकरआरा की मृत्यु हो गई । समीना गर्भवती थी । डॉ॰ कमाल एवं समीना की आर्थिक तंगी को देखते हुए जमाल खाँ ने अपनी मुस्तफाबाद में खेतवाली जमीन अस्पताल खोलने के लिए दे दी ।

समीना के पेट में जुड़वाँ बच्चे थे । अतः खुरशीदआरा उसकी देखभाल करने आ गई । मुस्तफाबाद में अस्पताल बनना शुरू हो गया । छत पर ढ़ाल बनवा कर नीचे बरसात के पानी को इकट्ठा करने के लिए एक बड़ा हौज बनवाने की योजना थी ताकि पानी का सदुपयोग हो सके ।

जमाल खाँ को पैरालेटिक अटैक हो गया । कमाल एवं खुरशीदआरा ने मिलकर उनकी काफी सेवा की । समीना माँ बन गई । जुड़वा बच्चों का नाम पराग और पंखुरी रखा गया । बच्चों की देखभाल और रात-रात भर जागने के कारण समीना बीमार हो गई और उसकी मृत्यु हो गई ।

इलाहाबाद के गांधी प्रतिष्ठान में 'नदियों का जुड़ना : एक महात्वाकांक्षी परियोजना' पर सेमिनार था । डॉ॰ कमाल अपने आपको वहाँ जाने से नहीं रोक पाए । परन्तु वह बोलते वक्त बेहोश होकर गिर पड़े तथा हफ्ते भर नर्सिंग होम में रहे । उन्हें अब यह अहसास हो चुका था कि दोनों बच्चों के लालन-पालन और बुजुर्गों की सेवा करना उनकी जिम्मेदारी है । अस्पताल का निर्माण अभी अधूरा था लेकिन 'शकरआरा दवाखाना' खोल उन्होंने मरीजों को

देखना शुरू कर दिया । उनके मन में भविष्य की योजनायें थी । उन्हें अनवरत आगे बढ़ते जाना था ।

2.4.7 जीरो रोड

नासिरा शर्मा द्वारा रचित उपन्यास 'जीरो रोड' सिद्धार्थ नामक एक युवक की कथा है । इस युवक की जिन्दगी इलाहाबाद के जीरो रोड से शुरू होकर जीरो रोड पर ही खत्म हो जाती है । समाज में साम्प्रदायिकता का उन्माद फैलाकर कुछ निहित स्वार्थी लोग किस तरह दंगे फैलाने का षडयंत्र करते हैं, लेखिका ने इसे केन्द्र में रखकर इस उपन्यास की रचना की है । उपन्यास को वस्तुतः दो हिस्सों में बाँटा जा सकता है - एक हिस्सा जहाँ दुबई में बसे लोगों के जीवन को दर्शाता है, तो दूसरा हिस्सा इलाहाबाद शहर का ।

सिद्धार्थ रोजगार के लिए दुबई गया था । दुबई कम आबादी वाला एक अत्याधुनिक शहर है । जिन्दगी की सारी चीजें यहाँ उपलब्ध है । फिर भी सिद्धार्थ को इलाहाबाद की काफी याद आती थी । पाकिस्तानी बरकत उस्मान, दक्षिण भारतीय रामचन्द्रन, श्रीलंका के इंजीनियर श्रीनिवासन, ईरानी ताजिर फिरोज मिखची, बांगलादेशी सुदर्शन घोष, सूरत निवासी शाह आलम वहाँ उसके घनिष्ट मित्रों में शामिल थे ।

सिद्धार्थ के पिता रामप्रसाद, माँ राधारानी, बहन पूनम और छोटा भाई विवेक इलाहाबाद में ही रहते थे । लाला जगतराम उनके पड़ोसी एवं घनिष्ट मित्र थे । उनकी बड़ी बेटी कविता सिद्धार्थ को पसंद करती थी । दोनों एक ही जाति के थे । अतः लाला जगतराम को भी वह कविता के योग्य लगता था । सिद्धार्थ के घर में फोन नहीं था, अतः वह इनके घर फोन करके ही अपने परिवार के बारे में जानकारी लेता था । अतीत से जुड़ी घटनाओं को यादकर

सिद्धार्थ काफी दुःखी हो जाता था । उसे ऐसा लगता जैसे अतीत का दंश उसे चैन से जीने नहीं देगा । ऐसी स्थिति में वह अनायास ही समुद्र के किनारे चला जाता और घंटों वहाँ बैठकर अपने में खो जाता ।

एक दिन सिद्धार्थ की मुलाकात रमेश शुक्ला से हुई । उसका जन्म यहीं हुआ था । उसके माता-पिता राजस्थान के गंगानगर से चालीस साल पहले यू.ए.ई. आए थे । रमेश एक फोटोग्राफर था । उसने दुबई के विकास और यू.ए.ई. के सभी प्रांतों में घूम-घूम कर नए अंदाज में चित्र खींचे थे । उसे उसके 'फीचर फोटो' पुस्तक पर दुबई का नेशनल अवार्ड मिला था । रमेश और उसका दोस्त ईयाद इलाहाबाद के महाकुंभ पर एक डाक्यूमेंटरी फिल्म बनाना चाहते थे । सिद्धार्थ ने इलाहाबाद में उनके ठहरने की सारी व्यवस्था अपने छोटे भाई विवेक के द्वारा करवा दिया । कुंभ के शुरु होते ही रमेश शुक्ला और ईयाद इलाहाबाद आ गए । सबसे पहले वे गंगा दर्शन को गए फिर सिद्धार्थ के घर । जीरो रोड पर यात्रियों से भरी बस एवं मेले में आने वाले श्रद्धालुओं को देखकर ईयाद भावुक हो गया । उसे अपना लेबनान याद आ गया । अगले दिन रमेश और ईयाद ने गंगा किनारे नागाओं और पंडों के साथ मिलकर दिन बिताया । ईयाद सूर्य नमस्कार कर गंगा में डुबकियाँ लगा रहा था तो रमेश किनारे खड़े हो तस्वीरें ले रहा था । फिर उन्हें बनारस जाना था, जहाँ मंदिरों पर एक डॉक्यूमेंटरी तैयार करनी थी ।

अब रामप्रसाद को सिद्धार्थ पर काफी नाज था । पैसे आने के कारण उसके रहन-सहन, सोच और व्यवहार में काफी परिवर्तन आ गया था । उनके बचपन के मित्र लाला जगतराम अपनी बेटी का विवाह सिद्धार्थ से करना चाहते थे, किन्तु रामप्रसाद का मन अब बदल गया था ।

रमेश शुक्ला से मिलने के बाद विवेक अब अपनी पढ़ाई पर ज्यादा ध्यान देने लगा था, ताकि उच्च शिक्षा के लिए वह विदेश जा सके ।

दूसरे देशों से दुबई में काम करने आए लोगों के बीच प्रतिस्पर्धा, उनके निम्न रहन-सहन, ठेकेदारों द्वारा उनका शोषण देखकर सिद्धार्थ काफी दुःखी हो जाता । वह महसूस करता था कि उसके चारो ओर दलदल है । भारत के लोग काफी अच्छी स्थिति में है । घर जाने से पहले अपने सभी मित्रों को उसने खाने पर आमंत्रित किया तथा उन्हें बताया कि धर्म के उन्माद में दिशाहीन होकर कुछ हिन्दू अतिवादियों से उसका परिचय हो गया । इन अतिवादियों ने उसके ही मुहल्ले के हामिद नामक एक युवक की हत्या कर दी । हामिद के जनाजे पर उसके परिवार वाले एवं उसकी छोटी बहन की मानसिक स्थिति देखकर वह टूट गया । हामिद की छोटी बहन से उसे प्यार था ।

सिद्धार्थ दुबई से इलाहाबाद आ गया । वह महसूस कर रहा था कि इस शहर में हिन्दू-मुस्लिम समुदायों के रिश्तों में जहर घोलने काम कुछ स्वार्थी लोग कर रहे हैं । यही हिन्दुस्तानी विदेशों में सारे वैर भूलकर आपस में प्यार से रहते हैं, मगर अपने देश में एक दूसरे के खून के प्यासे हो जाते हैं ।

दुबई वापस आने पर पता चला कि उसके मित्र लतीफ फरहम की किसी फौद नामक व्यक्ति ने चाकू मार कर हत्या कर दी । इस दुःख को भुलाने के लिए वह शाह आलम के साथ घूमने निकल पड़ा । वहीं एक बुक कार्नर में रमेश शुक्ला की नई पुस्तक 'इंडिया, माई पैरेन्टस बर्थ प्लेस' पर उसकी नजर पड़ी । वह आगे बढ़ पुस्तक के पन्नों को पलट कर देखने लगा । उसमें इलाहाबाद के कुंभ के फोटो थे, सिद्धार्थ के घर और उसके परिवार के सभी लोगों के फोटो थे । वह भाव विह्वल हो गया ।

रमेश और ईयाद कुछ महीनों से गायब थे । पता चला कि मोरक्को में रमेश और ईयाद को कबीले वालों ने समलैंगिक होने के कारण मार डाला था । सिद्धार्थ पूरी तरह टूट चुका था । उसके सारे दोस्त या तो अपने देश लौट गए या फिर उनकी मृत्यु हो गई । अब वह यहाँ भी वैसे ही बेचैन रहने लगा जैसे इलाहाबाद में अतिवादी घटनाओं के बाद ।

रामप्रसाद बेटे सिद्धार्थ और बेटी पूनम की शादी को लेकर चिंतित रहने लगा । विवेक उच्च शिक्षा के लिए अमेरिका जानेवाला था । एक सुबह जब रामप्रसाद जीरो रोड पर टहल रहे थे, तभी एक टैम्पो ने उन्हें धक्का दे दिया जिससे उनकी मृत्यु हो गई । इसके पीछे हिंदू अतिवादियों का हाथ था क्योंकि सिद्धार्थ ने उनकी बात नहीं मानी थी । उसी तरह हाफिज मुर्तुजा कमाल की भी संदेहास्पद मौत हो गई । उनकी किताबों की एक दुकान थी जिसमें उन्होंने धार्मिक उन्माद फैलाने वाली किताबों को बेचने से मना कर दिया था । पिता की दुःखद मौत के बाद सिद्धार्थ को लगा कि अब दुबई में रहने का कोई औचित्य नहीं है । जिस शहर में उसने अपने जीवन का बहुमूल्य सात वर्ष बिताये, आज वहाँ उसका कोई मित्र नहीं बचा था, जो उसे एयरपोर्ट तक छोड़ सके ।

दुबई छोड़ने से पहले वह पार्क सफ़ा में अजीम गाफ़ के नीचे घुटनों के बल ऐसे बैठ गया जैसे वह अपने एकमात्र मित्र को अपनी जिन्दगी की सारी बातों से अवगत करा रहा हो ।

2.4.8 पारिजात

'पारिजात' मोटे तने वाला बेहद सख्त छाल का एक पेड़ होता है । इसके फूल का रंग सफेद होता है । हमारे देश की कई लोक कथायें, दंत

कथायें, इतिहास, धर्म और साहित्य का संबंध इसके पेड़ एवं फूलों से है । नासिरा शर्मा के उपन्यास 'पारिजात' के कथा का परिवेश मूलतः तीन भागों में विभक्त है - इलाहाबाद, लखनऊ और अरब । एक ओर इस उपन्यास में जहाँ नई पीढ़ी के युवकों का जीवन संघर्ष, पाश्चात्य संस्कृति की ओर उनका झुकाव, प्रेम विवाह, दाम्पत्य संबंध, उनका रहन-सहन, परिवार की चिंता, नौकरी की समस्या एवं उससे उत्पन्न तनाव का वर्णन है, तो दूसरी ओर पुरानी पीढ़ी के लोगों का अपने बच्चों के अपनी जड़ से विस्थापित होने की मनोव्यथा एवं उनके भविष्य को लेकर चिंतित होना है ।

उपन्यास का मुख्य पात्र रोहन है । रोहन के पिता प्रह्लाद दत्त इलाहाबाद विश्वविद्यालय में अर्थशास्त्र के प्रसिद्ध प्रोफेसर थे । उसकी माँ प्रभा दत्त भी अंग्रेजी साहित्य की प्राध्यापिका थी । रोहन उनकी इकलौती संतान था ।

वशारत हुसैन और जुल्फीकार अली, प्रह्लाद दत्त के बचपन के मित्र थे । वशारत हुसैन पुलिस विभाग में आई॰जी॰ एवं जुल्फीकार अली एक आर्मी ऑफिसर थे । प्रह्लाद दत्त इलाहाबाद में रहने लगे थे तथा वशारत और जुल्फीकार लखनऊ में । वशारत हुसैन के दो बच्चे थे - पुत्र मोनिस एवं पुत्री रूही । जुल्फीकार अली का इकलौता पुत्र काजिम था ।

रोहन, मोनिस, रूही एवं काजिम गहरे मित्र थे । सभी ने एक साथ हॉर्वड विश्वविद्यालय से उच्च शिक्षा प्राप्त की थी । रोहन और मोनिस ने विदेश में ही नौकरी कर ली । किन्तु रूही अपने पिता की मृत्यु के बाद पी-एच॰डी॰ की पढ़ाई छोड़कर लखनऊ आ गई । उसकी शादी काजिम के साथ हो गई । मोनिस

की शादी शबाना से हो गई । रोहन ने अपने से आठ साल बड़ी एक अंग्रेज लड़की ऐलेसन से प्रेम विवाह कर लिया । रोहन के पुत्र का नाम पारिजात था जिसे प्यार से 'टेसू' बुलाते थे । रोहन को ऐलेसन और टेसू से बेहद प्यार था । ड्यूटी से आने के बाद सारा वक्त बेटे की देखभाल में बिताता था । ऐलेसन अपना अधिकांश वक्त अपने फ्रांसिसी ब्यॉ-फ्रेंड के साथ बिताती थी । उसने बड़ी चालाकी से फ्लैट के सारे कागजात, बैंक अकाउंट के सारे पैसे एवं अन्य चीजें अपने नाम करवा लिया । फिर आए दिन वह रोहन से उलझने लगी जिसमें हल्की हाथापाई हो गई । ऐलेसन ने पुलिस में रिपोर्ट दर्ज करवा दिया कि रोहन चरित्रहीन और आपराधिक स्वभाव का है, जो दिन-रात उससे मारपीट करता है । उसने एक झूठा मेडिकल रिपोर्ट भी जमा करवा दिया । निरपराध होने पर भी रोहन को बीस वर्षों की कठोर सजा होने की संभावना बन गई । रोहन को जेल में बंद कर बच्चा ऐलेसन को दे दिया गया ।

इस खबर से रोहन के माता-पिता टूट गए । रोहन को मुकदमें से निजात दिलाने के लिए उन्होंने अपना इलाहाबाद वाला घर बेचकर पैसों की व्यवस्था की । रोहन की माँ प्रभा ने पोते के गम में दुनिया छोड़ दी । संकट की इस घड़ी में प्रह्लाद दत्त को उनके प्रिय शिष्य निखिल चक्रवर्ती और उनकी पत्नी शोभा ने संभाला । ऐलेसन के विश्वासघात से रोहन पूरी तरह बर्बाद हो गया । बेटे की याद में वह तिल-तिल कर जलने लगा । नौकरी जा चुकी थी । अतः वह अपने पिता के साथ पुस्तैनी गाँव में रहने लगा । गाँव की एकरसता से घबराते रोहन को पिता ने रूही से मिलने की सलाह दी । रूही बीमार थी । पति काजिम की असमय मृत्यु ने उसे दुःख के गहरे अँधेरे में डुबो दिया था । रूही के दुःखों को देखकर रोहन को अपना दुःख तुच्छ लगने लगा । रूही गहरे अवसाद में थी । उसकी दयनीय अवस्था देख कर रोहन का दिल बैठ

गया । धीरे-धीरे रोहन के मधुर व्यवहार से रूही के स्वाथ्य में सुधार होने लगा । सही ईलाज से वह लगभग स्वस्थ हो गई । रोहन के साथ रहने से वह अपना दुःख भूलने लगी तथा माँ फिरदौस के साथ पारिवारिक दायित्वों का निर्वहन करने लगी । रूही को रोहन के बारे में कोई जानकारी नहीं थी । रूही की माँ अपने दोस्तों से रूही की फिर से शादी करने की चर्चा करने लगी ।

रोहन कुछ दिनों तक इलाहाबाद में अपने पिता के पास रहकर फिर नौकरी की खोज में अरब चला गया । रूही को रोहन का चला जाना बहुत खल रहा था । एक दिन रूही से मिलने उसके बचपन की सहेली मारिया मेनन आई । उसने रोहन और उसके बेटे की तस्वीर देख रूही को ऐलेसन के विश्वासधात के बारे में बताया । रोहन जब गहरे अवसाद में था तब मारिया ने ही उसकी काउंसिलिंग की थी, सुनकर रूही रो पड़ी ।

रूही निखिल का पता खोजकर प्रो॰ प्रहलाद दत्त से मिलने गई । कुछ दिनों बाद मारिया ने ई-मेल पर रोहन के कंपनी का फोन नम्बर रूही को भेजा । रोहन इटली गया हुआ था । कम्पनी से रूही को उसका पर्सनल नम्बर मिला । रूही ने रोहन से लौट आने का प्यार भरा अनुरोध किया जिसे रोहन ठुकरा न सका । किन्तु रोहन की जेब खाली थी । अतः वह फ्रीलांस काम करने लगा । इटली में उसने ऐलेसन और अपने बेटे को देखा । वह जब तक उन तक पहुँचता वे भीड़ में खो गए । अरब लौटते वक्त वह विमान में ही अचेत हो गया । रोहन को अरब में पहले जैसी कोई सम्मानित नौकरी नहीं मिली । छोटे-मोटे प्रोजेक्ट करके उसने इतना पैसा कमा लिया कि वह अपने पिताजी के लिए इलाहाबाद में एक छोटा-सा घर खरीद सके । रूही ने रोहन को ई-मेल किया कि उसने शादी का फैसला कर लिया है और इस पर विचार करने के लिए रोहन का

लखनऊ आना जरूरी है । रोहन लखनऊ आ गया तब रूही ने बताया कि वह रोहन से शादी करना चाहती है । रोहन ने शांत होकर अपने बारे में बताकर विचार करने को कहा । किन्तु रूही अपनी बात पर अडिग थी । रोहन अपने पिता की अनुमति लेने के लिए इलाहाबाद आ गया ।

निखिल के सहयोग से रोहन ने अपना पुराना घर खरीद लिया था । एक दिन एकांत में रोहन ने पिता से रूही की इच्छा बताकर उनकी अनुमति चाही । खुशी से प्रहलाद दत्त की आँखें गीली हो गई । बहुत ही सादगी से अँगूठी की रस्म पूरी की गई । निखिल ने तय किया कि बारात प्रो॰ दत्त के पुराने घर से ही लखनऊ के लिए प्रस्थान करेगी । पुराने घर की चाभी पाकर प्रो॰ दत्त ने रोहन को गले से लगा लिया । उनके बिखरे सपनों को रोहन अब संभाल चुका था । इसी घर से बारात निकली । रूही और रोहन ने सादगी से आपस में मुताह कर लिया ।

2.4.9 अज़नबी जज़ीरा

'अजनबी जज़ीरा' नासिरा शर्मा द्वारा रचित उपन्यास है । इस उपन्यास में एक ओर जहाँ इराक पर विदेशी आक्रमणकारियों द्वारा प्रत्यक्ष-अप्रत्यक्ष निगरानी में साँस लेते नागरिकों की मानवीय दशा, उनकी संवेदनाओं, मनःस्थितियों, जिन्दगी बचाने के लिए सब कुछ दाव पर लगाती औरतें, छोटी - छोटी चीजों को तरसते और उसके लिए घर के बहुमूल्य विरासतों एवं यादगारों को बाजार में बेचने को मजबूर लोगों का वर्णन है तो वहीं दूसरी ओर एक अद्भुत प्रेम कहानी भी है, जिसमें घृणा और प्रेम के मिश्रित भावों का अनूठा संगम है ।

समीरा अपने सोलह साल के दाम्पत्य जीवन में अपने पति अलबनाही एवं पाँच बेटियों - साजदा, लैला, वफ़ा, सबा और नेहा के साथ बगदाद में प्रसन्नतापूर्वक जीवन यापन कर रही थी । अलबनाही एक एडवोकेट था । वह दमा का मरीज था । विदेशी आक्रमणकारियों द्वारा बगदाद पर बम बरसाए जाने के कारण बारूदी माहौल में उभरे दमें ने उसकी जान ले ली । आर्थिक नाकेबंदी और बेकारी के बीच इराक की स्थिति दयनीय हो गई थी । एक बत्तीस वर्षीय जवान विधवा का विदेशी फौजी दस्तों और गिरते बमों के बीच जीना सहज नहीं रह गया था ।

बसरा की बमबारी में समीरा के माता-पिता की मृत्यु हो गयी थी । ससुराल में सिर्फ चचा बचे थे । समीरा ने फौजी जवानों से बचने के लिए चचा के एक पुराने घर में पनाह ली थी । पुरानी सरकार के समर्थक होने के कारण उसके पति के सारे मित्रों को मार दिया गया था । आमदनी का कोई जरिया न होने के कारण वह घर की मूल्यवान चीजों को बेचकर जरूरतें पूरी कर रही थी ।

मौसम बदलने के कारण एक-एक कर समीरा की सभी बेटियों को बुखार आ गया । सोने की चेन बेचकर उन सबों के लिए वह दवा लाई । बेटियों की सुरक्षा के कारण वह घर के सारे दरवाजे एवं खिड़कियाँ बंद रखती । बेटियों के भविष्य को लेकर वह सदैव चिंतित रहती । निराशा के इस दौर में उसे आत्म-हत्या के भी ख्याल आने लगे ।

एक दिन समीरा को एक अंग्रेज फौजी अफसर मार्क मिला । समीरा बगदाद में आर्मी को अरबी भाषा पढ़ाया करती थी । मार्क समीरा को बेहद पसंद करता था एवं उससे मन ही मन प्यार करता था । समीरा उसे एक

विदेशी आक्रमणकारी समझ उससे घृणा करती थी । किन्तु मार्क के निश्चल प्रेम भरे व्यवहार ने उसके मन में हमदर्दी जगा दी और वह उससे बातचीत करने लगी ।

एक दिन मार्क ने उसे अपने घर चलने का निमंत्रण दिया । समीरा मार्क के साथ उसके बैरकनुमा कमरे में गई, जहाँ चारों तरफ किताबों की आलमारियाँ थी, सामने मार्क के माँ की तस्वीर लगी थी । बातचीत की शुरूआत में समीरा ने मार्क को जालिम, क्रूर, हत्यारा और उसके मुल्क को रौंदने वाला बताया । किन्तु मार्क ने शालीनता से कहा - जैसे वह दूसरों की सच्चे दिल से मदद करता है, वैसे ही उसकी भी किया है । मार्क ने समीरा से अपने प्यार का इजहार किया । वह उसकी ईमानदारी, डिवोशन और देश-प्रेम से प्रभावित था । इस संबंध में मार्क अपनी माँ से भी बात कर चुका था ।

अगले दिन समीरा चचा से मिलने गई । उसे मकान के सिलसिले में बात करनी थी । उनलोगों को अमेरिका का वीजा मिल गया था । समीरा ने मार्क के बारे में चची को बताया । उन्होंने इस रिश्ते को स्वीकार कर लेने को कहा ताकि बच्चियों का भविष्य सुरक्षित हो सके । चचा का लिखा कागज, कुछ नोट और प्यार का आखिरी तोहफा चची के गले की चेन लेकर वह अपने बुजुर्गों से जुदा हुई तब उसे महसूस हुआ कि वह कितनी अकेली और असहाय है । चची की दी हुई सोने की चेन के अलावा उसके पास कोई चीज नहीं बची थी जिसे बेचकर वह आगे के दिनों को गुजार सके ।

मार्क अब समीरा को काफी अच्छा लगने लगा था । समीरा ने जब अपनी बेटियों की चर्चा की तो पता चला कि मार्क पहले से ही उन लोगों के बारे में जानता है । मार्क के सामने एक बड़ी समस्या थी कि वह अपनी नई

फैमिली को किस तरह यहाँ से निकाल कर अपने देश भेज सके । उसकी ड्यूटी की मियाद पूरी होने वाली थी । वह अतिशीघ्र शादी करना चाहता था ताकि पासपोर्ट बन सके । मार्क समीरा की बेटियों से भी मिलना चाह रहा था । मार्क ने समीरा को एक सोने की चेन उपहार में दी । जिसे देख बेटियों ने खुश होकर मार्क से मिलने की इच्छा प्रकट की । नाम सुनकर बेटियों को लगा कि वह इराकी क्रिश्चियन होगा । बेटियों ने समीरा की शादी मार्क से होने की मंजूरी दे दी किन्तु जब उन्हें मालूम हुआ कि मार्क एक अंग्रेज मिलिटरी मैन है तो सभी दुःखी हो गए । समीरा ने कोई सफाई नहीं दी । अगले दिन बेटियाँ गीत गा रही थी । अरसे बाद घर में खुशियाँ आई थी । घर में अच्छा खाना बनाया और खाया गया । मार्क ने मिलने पर बेटियों से कहा कि तुम सबको मैं हमेशा पिता का प्यार दूँगा ।

रूढ़िवादी और आतंकवादी समूह कोई हंगामा न खड़ा कर दे, इसलिए मार्क और समीरा ने सभी बातों को गुप्त रखा था । मार्क के परिवार में केवल उसकी माँ थी । वह शादीशुदा और दो बेटियों का बाप था । किन्तु ट्वीनटावर की घटना में उसका परिवार उजड़ गया था ।

आखिरकार बगदाद छोड़ने का समय आ गया । मार्क का हमलावर फौजी होना सबा को स्वीकार नहीं था । अतः मार्क ने इस्तीफा देने की बात बताई और सभी की सहमति से समीरा को अंगूठी पहनाया । मार्क और समीरा ने बच्चों को पहले ग्रैनी माँ के पास भेज दिया और कुछ दिनों के बाद वे दोनों भी उनके पास पहुँच गए ।

2.4.10 कागज की नाव

नासिरा शर्मा द्वारा रचित उपन्यास 'कागज की नाव' की कथावस्तु बिहार के परिवेश पर आधारित है । नासिरा शर्मा ने बिहार के गौरवपूर्ण इतिहास का जिक्र करते हुए वर्तमान व्यवस्था में बिहार के मध्यमवर्गीय समाज के शिक्षित बेरोजगार युवकों की मानसिकता का वर्णन किया है ।

बिहार के बेरोजगार युवक कमाने के लिए मध्यपूर्व अरब देशों में जाकर अपने जीवन के महत्वपूर्ण साल उन देशों को समृद्ध बनाने में समर्पित कर देते हैं । वहाँ वे रूपयों की खातिर कठोर जीवन बिताने को बाध्य होते हैं । अपने परिवार को याद करके वे नवीन उर्जा से संचारित हो जाते हैं । परन्तु बिहार की सामाजिक स्थिति, कट्टर जातिगत व्यवस्था, पिछड़ी मानसिकता एवं भ्रष्ट पुलिस प्रशासन के कारण उनके सारे सपने बिखर जाते हैं । कठोर परिश्रम के बाद भी वह खुद को जहाँ से चले थे, उसी स्थिति में पाते हैं । आज का समाज भौतिकवादी है । पारिवारिक संरचना टूट रही है । पैसों के कारण माँ-बाप, भाई-बहन, पति-पत्नी, पिता-पुत्र आदि संबंधों में दूरी पनप रही है । जीवन की इन्हीं समस्याओं को केन्द्र में रखकर 'कागज की नाव' की रचना की गई है । महलका इसकी केन्द्रीय पात्र है । महलका का पति जाकिर सऊदी अरब में नौकरी करता है । परिवार में तीन बच्चे, जाकिर के बूढ़े पिता जहूर मियां एवं नौकर गोलू है । महलका की माँ महजबी पढ़ी-लिखी होने के बाद भी टोने-टोटकों का सहारा लेकर अपने पति को उसके परिवार से अलग करवा लेती है । अब वह आमिल बदरुद्दीन की मदद से महलका के पति को परिवार से अलग करने की कोशिश कर रही है । जाकिर की बहन ने अपने ससुराल वालों के अत्याचारों से

तंग आकर आत्महत्या कर ली थी । उसके सास-ससुर को जेल तथा बीमारी से बहनोई की मृत्यु हो गई थी । जाकिर की अनुपस्थिति में महलका का झुकाव राशिद की तरफ हो रहा था ।

अमजद और महजबी की दूसरी बेटी माजदा का निकाह होने वाला था । किन्तु महजबी ने फिर निकाह से पहले ही उसके परिवार में बटवारे के लिए जादू-टोने का सहारा लेना शुरू कर दिया । माजदा माँ के इस व्यवहार से दुःखी रहती थी । महजबी को अपनी गलती का अहसास हुआ और उसने पश्चाताप करने का निर्णय लिया । बड़ी बेटी महलका को ससुर की सेवा करने एवं गृहस्थी सही ढ़ंग से चलाने का सख्त निर्देश दिया । राशिद के महलका के जीवन में तूफान लाने की कोशिश को अमजद ने अपनी समझदारी से संभाल दिया । माजदा की शादी हो गई और वह अपने अच्छे व्यवहार से सबकी प्रिय बन गई ।

जाकिर के दोस्त की चचेरी बहन मलकानूर अपने दो वर्ष के बच्चे को छोड़कर ससुराल वालों के अत्याचारों एवं उलाहनों से तंग आकर अपना घर छोड़ कर दूसरे गाँव में शरीफ सिद्दिकी के घर में नौकरानी का काम कर रही थी । उसका पति जावेद सऊदी अरब में काम करता था । अंग्रेजी माध्यम से शिक्षित मलकानूर की शादी एक पिछड़ी सोच वाले परिवार में हो गई थी जहाँ उसे हर तरह से पीड़ा और प्रताड़ना के सिवा कुछ भी नहीं मिला । जावेद मलकानूर को लाने शरीफ सिद्दिकी के घर गया । किन्तु मलकानूर ने यह कह कर जाने से इन्कार कर दिया कि या तो वह उसे अपने साथ रखे या फिर उसके लिए एक कमरे की व्यवस्था कर दे जहाँ वह अपने बच्चे के साथ रह सके । एक दिन जावेद सीढ़ियों से लुढ़क कर आंगन में खेलते हुए अपने बच्चे

पर गिर पड़ा । दोनों की मौत हो गई । यह देख जावेद के माँ की हृदय गति रूक गई । मलकानूर को जब यह पता चला तो वह जैसे पागल हो गई । वह किसी तरह अपने पति एवं बेटे की कब्र पर फातिहा पढ़ने पहुँची । मलकानूर अब सारे जायदाद की अकेली मालकिन थी । अतः घात लगाए जावेद के चाचा एवं उसके बेटों ने मलकानूर की हत्या कर नाले में उसका शव फेंक दिया ।

सऊदी अरब कमाने गए पुरूषों के पीछे उनके परिवार में उनके कमाए पैसों को लेकर खूब खींचा-तानी, धोखा और बेवफाईयाँ चलती है । कहीं पत्नी पैसों पर अपना मालिकाना हक जमाने के लिए बूढ़े सास-ससुर की उपेक्षा करती है, तो कहीं सास की शक भरी निगाहें निर्दोष बहू का जीना मुहाल कर देती है । ऐसी ही स्थिति में नदीम का एक मित्र जो अपनी नवविवाहिता पत्नी को संयुक्त परिवार में छोड़कर सऊदी गया है, तीन साल के बाद वापस लौटने पर उसे एक साल के बच्चे से पिता के तौर पर परिचय करवाया गया । सारे परिवार की उपस्थिति में ही बड़े जेठ ने अफसाना के साथ जबरदस्ती की थी । नदीम के मित्र ने अपने बड़े भाई के खाने में जहर मिलाकर हमेशा के लिए परिवार से नाता तोड़ लिया ।

माजदा अपने पति के साथ शादी में सम्मिलित होने नवादा गई । वहाँ एक मेकेनिक कमर महमूद को देखकर अध्यापक गफ्फार चौंक गए । कमर महमूद की शादी उनके स्कूल के प्रिंसिपल की इकलौती बेटी शबिस्ता से होने वाली थी । उन्हें बताया गया था कि लड़का इंजीनियर है और सऊदी अरब में काम करता है । अध्यापक गफ्फार ने तुरंत इसकी सूचना अपने प्रिंसिपल साहब को दी । कमर महमूद ने उनसे पाँच लाख रूपये बतौर दहेज लेकर खर्च भी कर दिया था । बदनामी और जग हंसाई से बचने के लिए प्रिंसिपल साहब ने निर्णय

किया कि आसपास के किसी शरीफ घराने के लड़के से बेटी के हाथ पीले कर दें । गफ्फार उनके दोस्त क्रांति झा और प्रिंसिपल साहब रहीम के घर गए । रहीम एम॰ ए॰ का होनहार छात्र था । शबिस्ता और रहीम का निकाह हो गया । वे दोनों एक दूसरे को पसन्द करते थे ।

दो महीने की छुट्टी पर जाकिर अपने घर आया । पिता जहूर का इलाज चल रहा था । न्यायालय से जाकिर को अपनी बहन के बेटे सलीम के संरक्षण का अधिकार मिल गया था । किन्तु सलीम और उसके दादा-दादी के बीच के स्नेह और आत्मीय संबंध को देख कर उसने जाकिर को उसके घर पर ही छोड़ दिया । जहूर मियां का देहान्त हो गया । जाकिर अपनी छुट्टियाँ बिता कर जब सऊदी लौटा तब उसके दिलो-दिमाग में सिर्फ उसकी ड्यूटी थी ।

2.5 संदर्भ ग्रंथ सूची

उपन्यास

परवेज, मेहरुन्निसा (१९६९). *आँखों की दहलीज.* अक्षर प्रकाशन, नई दिल्ली.

परवेज, मेहरुन्निसा (१९७२). *उसका घर.* नेशनल पब्लिशिंग हाउस, नई दिल्ली.

परवेज, मेहरुन्निसा (१९७७). *कोरजा*. वाणीप्रकाशन, नई दिल्ली.

परवेज, मेहरुन्निसा (१९८१). *अकेला पलाश*. वाणीप्रकाशन, नई दिल्ली.

परवेज, मेहरुन्निसा (२००२). *समरांगण*. वाणीप्रकाशन, नई दिल्ली.

परवेज, मेहरुन्निसा (२००४). *पासंग*. वाणीप्रकाशन, नई दिल्ली.

शर्मा, नासिरा (१९८४). *सात नदिया: एक समन्दर*. अभिव्यंजना प्रकाशन, नई दिल्ली.

शर्मा, नासिरा (१९८७). *शाल्मली*. किताबघर प्रकाशन, नई दिल्ली.

शर्मा, नासिरा (१९८७). *ठीकरे की मंगनी*. किताबघर प्रकाशन, नई दिल्ली.

शर्मा, नासिरा (१९९३). *जिन्दा मुहावरे*. वाणीप्रकाशन, नई दिल्ली.

शर्मा, नासिरा (२००३). *अक्षयवट*. भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन, नई दिल्ली.

शर्मा, नासिरा (२००५). *कुंइयाजान*. सामयिक प्रकाशन,. नई दिल्ली.

शर्मा, नासिरा (२००८). *जीरो रोड*. भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन, नई दिल्ली.

शर्मा, नासिरा (२०११). *पारिजात*. किताबघर प्रकाशन, नई दिल्ली.

शर्मा, नासिरा (२०१२). *अजनबी जजीरा*. लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद.

शर्मा, नासिरा (२०१४). *कागज की नाव* . किताबघर प्रकाशन, नई दिल्ली.

******